स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

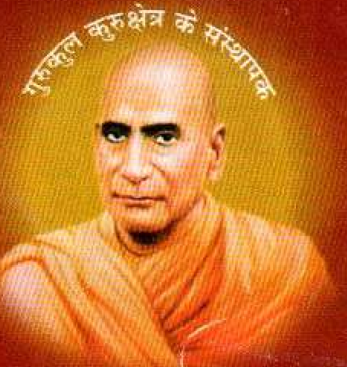

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

मार्गशीर्ष, वि० स० 2080 ● कलियुगाब्द 5124 ● वर्ष : 11 ● अंक :03 ● मार्च 2024

12वीं कक्षा के छात्रों के दीक्षांत समारोह में
ब्रह्मचारियों तथा गुरुकुल के अधिकारियों के साथ
'राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी'

स्वामित्व :

AN ISO 9001:2015 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा 136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

No.1 Residential School Of Haryana By Education World

दीक्षांत समारोह में पहुंचने पर आचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए
12वीं कक्षा के ब्रह्मचारिगण

12वीं कक्षा के दीक्षांत समारोह की झलकियां

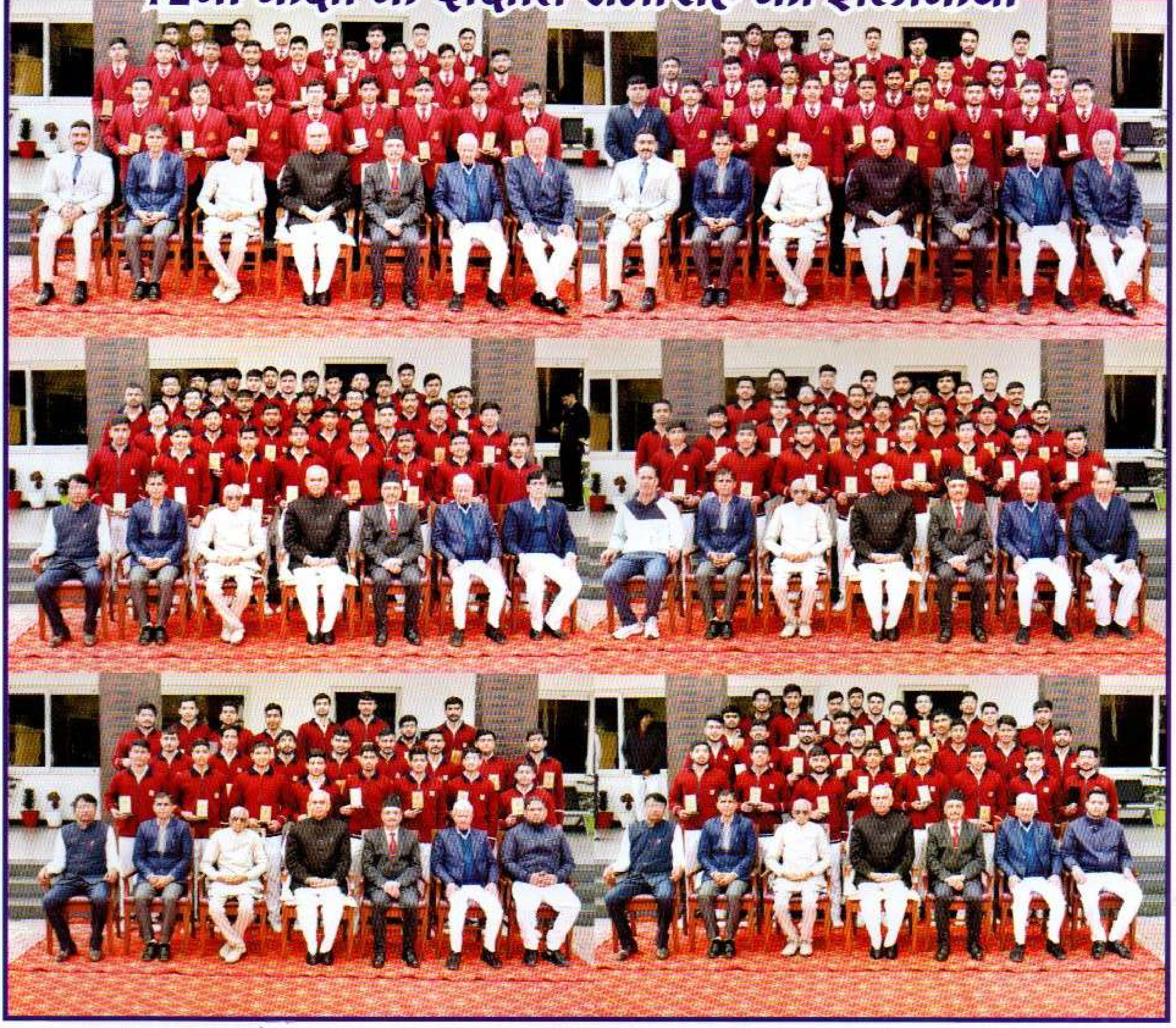

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

ESTD. 1912
ISO 9001-2015

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : महान् समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती... राजकुमार गर्ग	02
2.	दुनिया में सफलता की एकमात्र कुंजी है परिश्रम... आचार्य श्री देवव्रत जी	03
3.	जेईई-मेंस में गुरुकुल के छात्रों का ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम	04
4.	डॉ. सत्यपाल को कुलाधिपति नियुक्त करना अवैध... राधाकृष्ण आर्य	05
5.	महर्षि दयानन्द जयंती पर विशेष हवन व ऋषि लंगर का आयोजन	06
6.	नव ऊर्जा के साथ बढ़ें आगे... आचार्य सत्यप्रकाश	07
7.	प्राकृतिक कृषि से बचेगा देश का किसान... रामनिवास आर्य	08
8.	अद्‌भुत है भारतीय वैदिक गणित... प्रदीप दलाल	09
9	गुरुकुल परिवार द्वारा 'पद्मश्री डॉ. हरिओम' का भव्य अभिनन्दन	10
10.	हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ 12वीं कक्षा का दीक्षान्त समारोह	11
11.	माता निर्माता भवति ... जयपाल आर्य	15
12.	प्राकृतिक चिकित्सा का अभिन्न अंग 'उपवास' ... डॉ. देव आनन्द	16
13.	नचिकेता के तीन वरदान... आचार्य दयाशंकर	17
14.	गुरुकुल पहुंची यूपी की राज्यपाल, प्राकृतिक खेती का किया अवलोकन	19
15.	वैदिक धर्म की विशेषताएं ... जसविन्द्र आर्य	20
16.	गायत्री मंत्र की महिमा... विशाल आर्य	22
17.	राजा भोज की यज्ञ-भावना... शिवम् आर्य	23
18.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

सम्पादक परिवार

संरक्षक : आचार्य देवव्रत जी (राज्यपाल, गुजरात)
मुख्य संपादक : राजकुमार गर्ग
मार्गदर्शक : दिलावर सिंह
प्रबंध-संपादक : सुबे प्रताप
सह-संपादक : आ. सत्यप्रकाश
राजीव कुमार
कानूनी सलाहकारः राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकारः अनिल कुमार
व्यवस्थापक : राजीव कुमार
वितरण व्यवस्था : जयपाल आर्य
: जसविन्द्र आर्य
: अशोक कुमार

आवश्यक सूचनाएं

1. *'गुरुकुल दर्शन' मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।*
2. *पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 99960-26362 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया की हमें अपेक्षा रहेगी।*

–संपादक

संपादकीय

महान् समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती

राजकुमार गर्ग

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अपने अनोखे व्यक्तित्व और बेमिसाल प्रभाव के कारण जन-जन के मन में आदरपूर्वक बसा हुआ है। स्वामी दयानन्द जी ने एक साथ ही आडम्बरों, अन्धविश्वासों और अमानवीय तत्त्वों का जमकर विरोध करते हुए मानवीय सहानुभूति का दिव्य संदेश दिया। आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी को मान्यता देने के लिए स्वभाषा और जाति के स्वाभिमान को जगाया। स्वामी जी का जन्म गुजरात राज्य के मौरवी क्षेत्र में स्थित टंकारा नामक स्थान में 12 फरवरी 1824 को हुआ था। स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जयंती को लेकर इस बार महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी व आर्य समाज के प्रयासों से टंकारा में भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमें देश की **राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु** सहित **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, अमित शाह** सरीखे शीष नेताओं ने समारोह को सम्बोधित किया। यह भव्य आयोजन वर्षों तक आर्य समाज के लोगों की स्मृति में रहेगा क्योंकि इससे पूर्व महर्षि दयानन्द जी के विषय में इतना भव्य समारोह शायद ही कभी हुआ हो। इस भव्य समारोह के सफल आयोजन पर मैं आचार्य श्री देवव्रत जी व समस्त आर्य समाज व सहयोगी संस्थाओं को बधाई देता हूं।

स्वामी दयानन्द का उदय हमारे देश में तब हुआ था जब चारों ओर से हमें विभिन्न प्रकार के संकटों और आपदाओं का सामना करना पड़ रहा था। उस समय हम विदेशी शासन की बागडोर से कस दिए गए और सब प्रकार के मूलाधिकारों से वंचित करके अमानवता के वातावरण में जीने के लिए बाध्य कर दिए गए थे। स्वामी दयानन्द जी ने अपने वातावरण, समाज और राष्ट्र सहित विश्व की इस प्रकार की मानवता विरोधी गतिविधियों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया और इन्हें जड़ से उखाड़ देने का दृढ़ संकल्प भी किया।

स्वामी दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। स्वामी जी की आरम्भिक शिक्षा संस्कृत विषय के साथ हुई। इससे स्वामी जी के संस्कार, दिव्य और अद्‌भुत दिखाई पड़ने लगे। मूलशंकर ने एक दिन शिवरात्रि के सुअवसर पर शिवलिंग पर नैवेद्य खाते हुए चूहे को देखा। इसे देखकर मूलशंकर के मन में सच्चे शिव को प्राप्त करने की लालसा या अभिलाषा अत्यन्त तीव्र हो उठी।

21 वर्ष की आयु में वे अपने सम्पन्न परिवार को छोड़कर संन्यास पथ पर निकल पड़े। वे योग साधना करके शिव की प्राप्ति के लिए कठोर साधना करते हुए सच्चे गुरु की खोज में निकल पड़े थे। इस साधना सिद्धि के पथ में वे अनेक प्रकार के योगियों, सिद्धों और महात्माओं से मिले, ये विभिन्न तीर्थ स्थलों, धार्मिक स्थानों और पूज्य क्षेत्रों में भी भ्रमण करते रहे और आखिर मथुरा में व्याकरण के सूर्य दण्डी विरजानन्द जी से उनका सम्पर्क हुआ। इनके निर्देशन में स्वामी जी ने लगभग साढ़े तीन वर्षों तक व्याकरण व वेदों का अध्ययन किया। दीक्षा उपरान्त स्वामी विरजानन्द जी ने अपने इस अद्‌भुत शिष्य को यह दिव्य आदेश दिया कि '**अब जाओ, और देश में फैले हुए समस्त प्रकार के अज्ञानान्धकार को दूर करो।**' गुरु आदेश को शिरोधार्य करके दयानन्द जी इस महान उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए सम्पूर्ण देश का परिभ्रमण करने लगे।

देश के विभिन्न भागों में परिभ्रमण करते हुए स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना कर अन्धविश्वासों और रूढ़ियों का खण्डन तथा मूर्ति पूजा का तर्क के साथ विरोध किया। इसी सन्दर्भ में आपने एक दिव्य ग्रन्थ '**सत्यार्थप्रकाश**' लिखा। इसके अतिरिक्त '**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**', '**संस्कारविधि**', '**व्यवहारभानु**', '**वेदांग प्रकाश**' आपके श्रेष्ठ ग्रन्थ हैं।

स्वामी जी ने अपने आर्यावर्त देश के प्रति अपार प्रेम भक्ति को प्रकट करते हुए कहा था '**मैं देशवासियों के विकास के लिए और संसार में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल और सायं भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि वह दयालु भगवान् मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र मुक्त करे।**' स्वामी जी ने बाल-विवाह का कड़ा विरोध किया था।

स्वामी जी ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए भरपूर कोशिश की। वास्तव में स्वामी दयानन्द सरस्वती एक युग पुरुष थे, जो काल पटल पर निरन्तर श्रद्धा के साथ स्मरण किए जाते रहेंगे। हमारा यह दुर्भाग्य ही था कि स्वामी जी को जोधपुर नरेश के यहाँ एक वेश्या ने प्रतिशोध की दुर्भावना से विषाक्त दूध पिलवा दिया जिससे समाज को कुरीतियों की नींद से जगाने वाला यह महामानव लगभग 59 वर्ष की अल्पायु में 30 अक्तूबर 1883 को चिरनिद्रा में विलीन हो गया।

– राजकुमार गर्ग

दुनिया में सफलता की एकमात्र कुंजी है परिश्रम- आचार्य श्री देवव्रत जी

गुरुकुल में 12वीं कक्षा के दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन, गुरुजनों ने दिया उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद

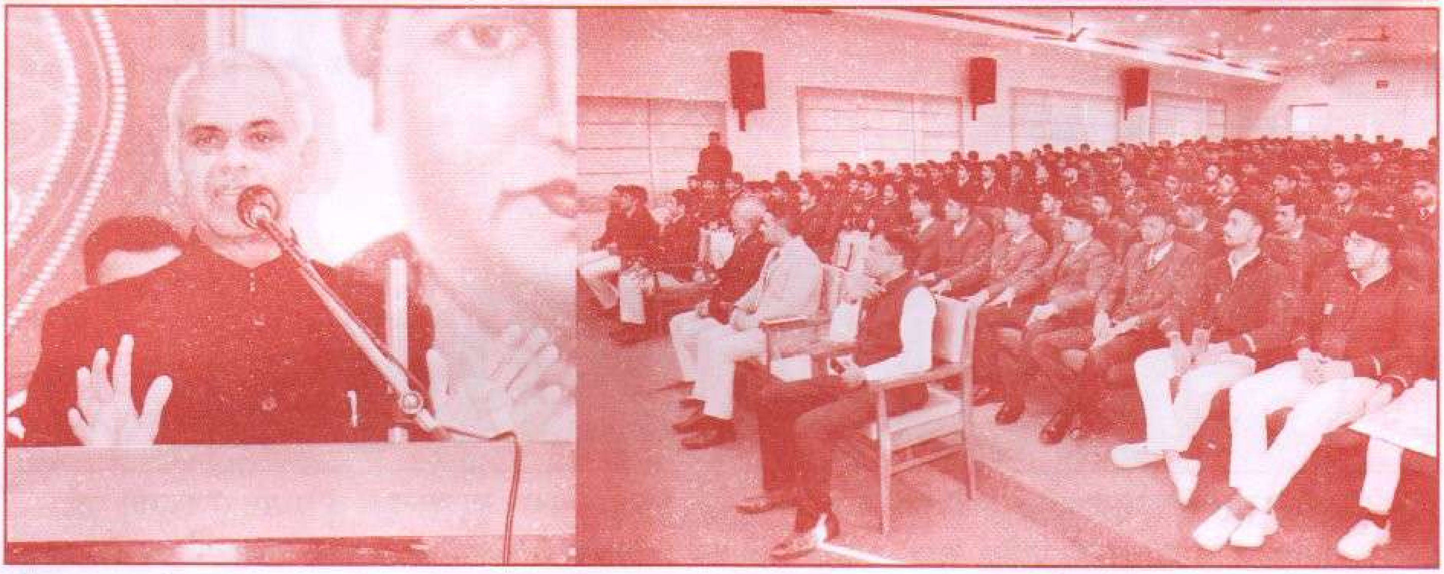

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार) : गुरुकुल में 12वीं कक्षा के छात्रों का दीक्षान्त समारोह मनाया गया जिसमें गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे। समारोह में गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार, प्राचार्य सुबे प्रताप सहित अध्यापक एवं संरक्षक उपस्थित रहे। मंच का सफल संचालन मुख्य संरक्षक संजीव आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर 12वीं के छात्रों द्वारा उपहार भेंट कर आचार्यश्री का अभिनन्दन भी किया गया। छात्रों को सम्बोधित करते हुए आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि दुनिया में सफलता की एकमात्र कुंजी कठोर परिश्रम है क्योंकि मेहनत के बिना कोई आदमी बड़ा नहीं बन सकता, इसलिए जीवन में परिश्रमी बने रहना, तभी आप विशेष बनोगे। गुरुकुलीय परिवेश और बाहरी दुनिया के बारे में छात्रों को जागरूक करते हुए उन्होंने कहा कि गुरुकुल का वातावरण अन्य कहीं नहीं मिलेगा, यह तो स्वर्ग के समान है जबकि यहां से निकलकर जब तुम बाहरी दुनिया के दूषित वातावरण में जाओगे तो वहां पर नशाखोरी जैसी कई बुराइयों से तुम्हारा सामना होगा, जिनसे तुम्हें केवल गुरुकुल में मिले संस्कार और यहां की दिनचर्या बचा सकती है।

उन्होंने कहा कि गुरुकुल में आपको अक्षरज्ञान के साथ-साथ संस्कार और अच्छे विचारों की जो शिक्षा दी गई है, उसे हमेशा याद रखना क्योंकि बड़े से बड़े स्कूल, कॉलेजों में भी आपको ऐसी शिक्षा नहीं मिलेगी। यदि आपने अपने विचार पवित्र रखे तो ऐसी बुराइयाँ आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं और जीवन में नई ऊंचाइयों को छुएंगे। उत्तम विचार, कड़ी मेहनत और चिन्तन से ही आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

आचार्यश्री ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में कड़ा परिश्रम, गुरुओं का आज्ञापालन तथा माता-पिता और बड़ों का सम्मान करना, सफलता का मूल-मंत्र है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल में ब्रह्मचारी, माँ के गर्भ की भांति सुरक्षित रहता है, उसे बाहरी दुनिया के वातावरण का बिल्कुल भी आभास नहीं होता। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अभावों की भट्टी में तपकर इन महापुरुषों ने अपने आपको कुंदन बनाया और आज सारा विश्व इनकी प्रतिभा का लोहा मानता है। उन्होंने कहा कि जीवन में हमेशा आशावादी बने रहो और कठोर परिश्रम करो, आपको सफलता अवश्य मिलेगी। अन्त में उन्होंने समारोह में उपस्थित सभी छात्रों को उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया।

समारोह के शुरुआत में निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार ने गुरुकुल के संक्षिप्त परिचय के साथ छात्रों की उपलब्धियों का विवरण दिया। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री के मार्गदर्शन में गुरुकुल परिवार का एक-एक सदस्य बच्चों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण हेतु प्रयत्नशील है। गुरुकुल में छात्रों के उत्कृष्ट परीक्षा-परिणाम इसके जीवन्त उदाहरण हैं, सफलता का यह सिलसिला यूंही जारी रहेगा। मुख्य संरक्षक **संजीव आर्य** ने 'हरयाणा में नंबर वन हम, देश में नाम हमारा...' गीत से गुरुकुल को फर्श से अर्श तक ले जाने वाले आचार्यश्री की दिव्य सोच और गहरे चिन्तन को परिभाषित किया।

जेईई मेन्स में गुरुकुल के छात्रों का ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम

7 छात्रों ने 99प्लस, 9 छात्रों ने 98 प्लस तथा 41 छात्रों ने 90प्लस परसेंटाइल हासिल किये

जेईई–मेन्स के ऐतिहासिक परीक्षा परिणाम पर छात्रों के साथ खुशियां मनाते हुए गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार, प्राचार्य सुबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य व संरक्षकगण।

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)- जेईई मेन्स की लिखित परीक्षा में इस बार गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ऐतिहासिक रिजल्ट रहा, गुरुकुल के 7 छात्रों ने 99प्लस तथा 9 छात्रों ने 98 प्लस परसेंटाइल हासिल किये हैं। गुरुकुल के 41 छात्र ऐसे हैं जिनके 90प्लस परसेंटाइल आए हैं। जेईई मेन्स के शानदार रिजल्ट को लेकर गुरुकुल परिसर में प्रबंध समिति के अधिकारियों व छात्रों ने जश्न मनाया। गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार, प्राचार्य सुबे प्रताप तथा व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने शानदार रिजल्ट छात्रों को लड्डू खिलाकर बधाई दीं।

इस अवसर पर हवलदार अशोक चौहान, अनिल कुमार, दिनेश कुमार, अमित कुमार आदि उपस्थित रहे। गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने भी जेईई मेन्स में सफल छात्रों को उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दीं। निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार ने बताया कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एन.टी.ए.) द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) में दाखिले हेतु जेईई–मेन परीक्षा में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के देव्यांश ने 99.8, आयुष राज ने 99.5, गौरव राज ने 99.4, रिक्की हरी ने 99.3, मानव ने 99.18, आदित्य कुमार ने 99.12 तथा उत्कर्ष ने 99 प्लस परसेंटाइल हासिल कर गुरुकुल का गौरव बढ़ाया है। वहीं मनीष कुमार, अंश, विश्वदीप, ऋतिक राज, रौनक भारद्वाज, अर्जुन, केशव, अनुराग तथा दक्ष शर्मा ने 98 प्लस परसेंटाइल प्राप्त किये। गुरुकुल के कुल 41 छात्रों ने जेईई–मेन्स में 90प्लस परसेंटाइल हासिल कर सफलता की नई इबारत लिखी है।

डॉ. प्रवीण कुमार ने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा ही नहीं वरन् देश का अग्रणी शिक्षण संस्थान है जहां विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम के साथ नैतिक शिक्षा और संस्कारों का पाठ भी पढ़ाया जाता है। जेईई मेन्स में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्र लगातार उम्दा प्रदर्शन कर रहे हैं जिससे दूसरे छात्रों को प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि हर वर्ष गुरुकुल के छात्र एनडीए, आईआईटी, नीट आदि प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर गुरुकुल की ख्याति बढ़ा रहे हैं जो आचार्यश्री के ओजस्वी मार्गदर्शन और अध्यापकों व छात्रों के अनथक परिश्रम का प्रतिफल है।

डॉ. सत्यपाल को कुलाधिपति नियुक्त करना अवैध- राधाकृष्ण आर्य

आर्य समाज से गुरुकुल कांगडी को छीनने का षड्यंत्र, हरियाणा के सभी आर्यजन करेंगे पुरजोर विरोध

सेठ राधाकृष्ण आर्य

चंडीगढ़ (प्रदीप दलाल)- आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा संचालित सभी आर्यसमाजों एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा शिक्षा मंत्रालय द्वारा सारे नियमों को ताक पर रखाते हुए गुरुकुल कांगड़ी सम-विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति के रूप में डॉ. सत्यपाल सिंह, सांसद की नियुक्ति किए जाने पर रोष जताया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति में कहा कि गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार आर्य समाज की सर्वोच्च शिक्षण संस्था है जिसकी स्थापना 1901 में महान् स्वतंत्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानंद द्वारा की गई थी। वर्तमान में इसकी स्वामिनी एवं स्पॉन्सरिंग समिति का दायित्व तीन आर्य प्रतिनिधि सभाएं जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त रूप से निभा रही हैं। डॉ. सत्यपाल सिंह ने 30 दिसंबर 2022 को कुलाधिपति पद से त्यागपत्र दे दिया था जिसे स्पॉन्सरिंग समिति ने स्वीकार कर लिया था और उनके स्थान पर 3 मार्च 2023 को नए कुलाधिपति के रूप में सुदर्शन शर्मा की नियुक्ति कर दी थी परन्तु उसके पश्चात् डॉ. सत्यपाल सिंह ने अपने पद एवं प्रभाव का दुरुपयोग करते हुए शिक्षा मंत्रालय और यूजीसी के अधिकारियों से नियम विरुद्ध, अवैध व असंवैधानिक और अनैतिकता से खुद को कुलाधिपति के रूप में नियुक्त करने का कुकृत्य कर रहे थे। हैरत की बात तो यह है कि यूजीसी एवं शिक्षा मंत्रालय द्वारा गत 11 फरवरी को डॉ. सत्यपाल सिंह को नियम विरुद्ध कुलाधिपति नियुक्त भी कर दिया गया है जबकि सुदर्शन शर्मा पहले से ही गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में कार्य कर रहे हैं। राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि ऐसा कैसे मुमकिन हो सकता है कि एक कुलाधिपति के रहते दूसरे कुलाधिपति को नियुक्त किया जा सके! उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के बैनर तले पूरे प्रदेश में आर्यजन डॉ. सत्यपाल सिंह की अनैतिकता और असंवैधानिक रूप से पद हड़पने का पूर्ण विरोध करेंगे। राधाकृष्ण आर्य ने बताया कि जल्द ही प्रदेश भर में मीटिंगों का आयोजन कर आगामी रणनीति बनाई जाएगी और डॉ. सत्यपाल सिंह द्वारा किये जा रहे इस कुकृत्य का पुरजोर विरोध किया जाएगा। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती द्वारा बनाई गई संस्था को किसी के हाथ लूटने नहीं देंगे। उन्होंने कहा कि जल्द ही आर्य प्रतिनिधि सभा के बैनर तले प्रदेश की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की विशेष बैठक बुलाई जाएगी और इस संदर्भ में आगे की रणनीति बनाई जाएगी। साथ ही इस विषय में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मिलकर पूरे मामले से अवगत करवाया जाएगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द जयंती पर हवन एवं ऋषि लंगर का भव्य आयोजन

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार) - आर्य समाज के संस्थापक एवं महान् समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के पावन अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सेठ राधा ष्ण आर्य के मार्गदर्शन में सैक्टर-17 स्थित वैदिक धाम मार्किट में गुरुकुल के मुख्य संरक्षक संजीव आर्य के ब्रह्मत्व में विशेष हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान राजकुमार गर्ग मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। ज्ञात रहे स्वामी दयानन्द जी की 200वीं जयंती पर राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के प्रयासों से गुजरात के टंकारा में, जहां पर स्वामी जी का जन्म हुआ था, भव्य समारोह मनाया गया जिसमें महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सहित देश के कई शीर्ष नेताओं व गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इसी संदर्भ में वैदिक धाम मार्किट में विशेष हवन और ऋषि लंगर का भव्य आयोजन किया गया जिसमें मार्किट के सैकड़ों दुकानदारों ने भी आहुतियां प्रदान कर स्वामी जी को नमन किया। राजकुमार गर्ग ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने समाज में एक नई क्रांति का सूत्रपात करते हुए जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाते हुए पाखण्ड के खिलाफ एक आंदोलन चलाया था। स्वामी जी ने ही सर्वप्रथम स्वराज का उद्घोष किया था और उन्हीं से प्रेरणा लेकर आजादी के आंदोलन में हजारों युवा क्रांति के मार्ग पर अग्रसर हुए। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने ही नारी को समाज में शिक्षा और समान अधिकारों की वकालत की और उन्हीं के प्रयासों से बाल-विवाह जैसी कुरीति को छोड़ने और विधवा विवाह की रीति का प्रचलन आरंभ हुआ। समाज को नई दिशा देने वाले 'आर्य समाज' का गठन भी स्वामी दयानन्द जी ने किया था जो विश्व में पाखण्ड, अज्ञानता, गुरुड़म, नशाखोरी, छुआछूत और भेदभाव जैसी बुराइयों के खिलाफ लोगों को लगातार जागृत कर रहा है। उन्होंने कहा कि स्वामी जी की 200वीं जयन्ती पर हम सभी को उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलने का प्रण लेना चाहिए। यज्ञ के उपरान्त ऋषि लंगर की व्यवस्था रही जिसमें हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, प्राचार्य सुबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, जयपाल आर्य, प्रचार प्रमुख विशाल आर्य, अनिल आर्य, शुभम् आर्य, अंकित आर्य, बलदेव राज आदि मौजूद रहे।

सन्त रविदास जयंती पर वैदिक धाम मार्किट में हुआ विशेष अग्निहोत्र

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)-आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संयुक्त तत्त्वाधान में सैक्टर 17 स्थित वैदिक धाम मार्किट में संत शिरोमणि गुरु रविदास की जयंती पर विशेष अग्निहोत्र का आयोजन किया जिसमें मार्किट के दुकानदारों ने साकल्य सामग्री से आहुतियां देकर लोक कल्याण की कामना की। गुरुकुल के मुख्य संरक्षक संजीव आर्य के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुए इस विशेष अग्निहोत्र के यजमान गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग रहे।

इस अवसर पर प्रचार प्रमुख विशाल आर्य, शुभम् आर्य भी मौजूद रहे। यज्ञोपरान्त अपने सम्बोधन में राजकुमार गर्ग ने कहा कि गुरु रविदास जी ने हमेशा समाज को एकसूत्र में पिरोने का प्रयास किया। अपनी रचनाओं में उन्होंने समाज में सौहार्द, प्रेम, भाईचारा और ज्ञान का अखण्ड दीप प्रज्ज्वलित कर समाज को नई दिशा दिखाने का कार्य किया। ऐसे महान् संत के जीवन से हमें भी प्रेरणा लेते हुए आपसी भाईचारा और प्रेम भावना का विस्तार करना चाहिए। प्रधान गर्ग ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य के नेतृत्व में पूरे प्रदेश में अनेक स्थानों पर विशेष हवन-यज्ञ करवाये गये, इससे जहां हजारों लोगों ने संत रविदास जी को नमन किया वहीं आपसी सौहार्द का माहौल कायम हुआ और लोगों में यज्ञ के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसा संगठन है जो जात-पात को नहीं मानता और सभी मत-सम्प्रदायों का सम्मान करता है।

आचार्य सत्यप्रकाश

नव ऊर्जा के साथ बढ़ें आगे

समय का पहिया कभी नहीं रुकता इसलिए हमें नई उम्मीदों व नए अहसासों को संजोकर जीवन-पथ पर नव ऊर्जा के साथ कदम बढ़ाने चाहिए। यह जीवन भावी सपनों और अपनी आशाओं को पूरा करने के लिए मिला है। हर दिन हमारे मन में एक अलग स्फूर्ति और सोच लेकर आता है इसलिए ऐसे में स्वयं अपने लक्ष्य को निर्धारित कर सकारात्मक माहौल से मिलने वाली ऊर्जा को अपने लिए फलदायी बनाया जा सकता है। सकारात्मक विचार ही जीवन में सभी सोपानों पर सफलता दिलाते हैं। ऐसे विचारों से हमारी कार्यशैली को दृढ़ पृष्ठभूमि मिलती है, जिस पर सफलता की सशक्त इमारत निर्मित होती है।

जीवन में आप जो भी लक्ष्य बनाते हैं, उन्हें हासिल करने में सकारात्मक विचारों की यही मजबूत इबारत मददगार साबित होती है। यह हर परिस्थिति में ना केवल आपको थामे रहेगी, बल्कि अपने सरोकारों से जोड़े भी रहेगी। आदर्श सोच और उत्साह से बड़े लक्ष्य भी आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं, इसलिए हम आदर्श सोच से दूरी न बनाएं, क्योंकि आदर्श कभी पुराने नहीं होते। उनकी प्रासंगिकता सदैव बनी रहती है।

मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं कि किसी भी प्रकार का सृजन पहले हमारे मन में प्रस्फुटित होता है, उसके पश्चात् वह वास्तविकता के धरातल पर जन्म लेता है। हम जीवन में जो लक्ष्य बनाते हैं, उनकी सहज कल्पना हमारे मन में ही बनती है। इस तरह वैज्ञानिक रूप से बनाई गई कल्पना पर पूरी शक्ति (ऊर्जा) से मेहनत की जाए तो कभी असफलता का सामना नहीं करना पड़ता इसलिए क्यों न इसी सकारात्मकता को हम अपना साथी बनाएं। जीवन में किसी भी बड़े लक्ष्य को पाने के लिए मानसिक और शारीरिक ऊर्जा को सहेजने का संकल्प भी अति आवश्यक है। नए विचारों के साथ जीवन की नई दिशा तलाशें और अपनी ऊर्जा को व्यर्थ कामों में लगाने से बचें।

आमतौर पर जीवन से जुड़ी ऐसी कई गतिविधियाँ होती हैं, जिनमें हम जाने-अनजाने ऊर्जा व्यय कर देते हैं इसलिए मन-मस्तिष्क की ऊर्जा को सहेजते हुए अपनी रचनात्मक सोच को निखारें, ताकि जो लक्ष्य हमने निर्धारित किये हैं, उन्हें पूरा किया जा सके। हम अपनी सारी शक्ति को केन्द्रित कर जीवन को बेहतर बनाने में लगाएँ। हम यह कभी न भूलें कि अतीत को भूलकर वर्तमान को साधने और भावी जीवन को सफल बनाने के लिए मन की ऊर्जा को सहेजना जरूरी है। जिन्दगी से जुड़ी वास्तविकताओं से संघर्ष करने के लिए भी यही ऊर्जा हमारा संबल बनती है। अपने मन के भीतरी उत्साह से स्फुरित इंसान हर मंजिल को पा सकता है इसलिए अपनी ऊर्जा को सहेजकर इस शक्ति का संचार उचित दिशा में करें। हम यह भी तय कर लें कि अपनी शक्ति को सकारात्मक क्षेत्रों में ही लगाएंगे।

आत्म-विश्लेषण के बिना किसी भी लक्ष्य को नहीं पाया जा सकता। इसके साथ ही सहेजी गई ऊर्जा को भी सही दिशा तभी मिल सकती है, जब हम स्वयं अपना मूल्यांकन करें। सर्वप्रथम अपने जीवन की दिशा को जानें, फिर वे जरूरी बदलाव अपनाएं, जो हमें सही राह पर ले जा सकें। जीवन में उत्साह का संचार करने वाला यह समय समझाता है कि अब और देरी न हो, क्योंकि हमारे आज से हमारा आने वाला कल जुड़ा है। स्व-मूल्यांकन से हमें पीछे मुड़कर देखने का मौका मिलता है। ऐसे में हम स्वयं अपने हर सही और गलत निर्णय को देख और समझ सकते हैं, जिससे मिलने वाली नई सोच हमें नया दृष्टिकोण देती है।

जीवन के अनुभवों के अनुसार जो निर्णय लिये जाते हैं, वे हमेशा व्यावहारिक और पुख्ता होते हैं। स्वयं को जान-समझकर आगे बढ़ने का प्रण लेते हैं, तो आने वाले जीवन में उठाया जाने वाला हर कदम सफलताओं का आधार बनता है। अपने आपको मूल्यांकित करना मन को उलझनों से नहीं घिरने देता। आप जो हैं, जितना सामर्थ्य रखते हैं, जैसा सोचते हैं और जो चाहते हैं-ये सब स्वयं जान लें, तो कोई भटकाव नहीं रहेगा। ऐसा करने पर शिकायतों का बोझ नहीं, बल्कि आशाओं का उत्साह मन में जगह पाता है। इन हालातों में अपने लक्ष्य को पाना और सरल हो जाता है।

हमारे व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं सामाजिक जीवन में भी नव-ऊर्जा का अत्यन्त महत्त्व है। दिशाहीन और बेतरकीब सोच अपना ही नहीं परिवार और पूरे समाज का भी नुकसान करती है। ऐसे में बतौर एक नागरिक हमारी क्या भूमिका है? इस पर भी जरूर विचार करें। अपनी ओर से समाज की बेहतरी के लिए न केवल सोचें, बल्कि हर संभव प्रयास करें। हम यह न भूलें कि जीवन में छोटी-छोटी खुशियों का भी बड़ा महत्त्व होता है। ये जिन्दगी को जिंदादिल और आनन्दित बनाती हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इनका कोई महंगा मोल भी नहीं चुकाना पड़ता, ये खुशियाँ तो हमारे चारों ओर बिखरी पड़ी हैं। इन्हें समेटने के लिए चाहिए सकारात्मक दृष्टिकोण और जीवन के हर पल को खुलकर जीने की चाह। फिर देर किस बात की है, मौका तलाशिए और खुशियों से अपना दामन भर लें।

-आचार्य सत्यप्रकाश आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्राकृतिक कृषि से बचेगा देश का किसान

रामनिवास आर्य

भारत एक कृषि प्रधान देश है। प्राचीनकाल से ही हमारे देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित रही है। किसान खेतों में मेहनत का पसीना बहाकर देश के नागरिकों का पेट भरता है मगर अपना खून-पसीना एक कर पूरे देश के लिए अन्न पैदा करने वाला किसान ही आज खेती से नाखुश है। खेती में रासायनिक खाद, पेस्टीसाइड और कीटनाशकों पर आने वाले खर्च से किसान कर्जदार हो रहे हैं। वर्ष दर वर्ष बढ़ती लागत और कम होती आय के कारण किसान कर्जदार हो रहे हैं जिस कारण कई किसान आत्महत्या जैसे कठोर कदम उठा लेते हैं। किसानों की इन समस्याओं को दूर करने के लिए देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी वचनबद्ध हैं। समय-समय पर वे अपने मंत्रिमण्डल व अन्य महानुभावों से इस विषय पर विचार-विमर्श करते रहते हैं। उन्होंने किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अभियान चलाया है जिसके तहत किसानों की आय दोगुनी करने के उपाय खोजे जा रहे हैं।

किसानों की आय कैसे दोगुनी हो, किस तरह से देश के किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारा जाए, इन बिन्दुओं पर अक्सर चर्चा होती है। किसानों की इस समस्या का एकमात्र समाधान प्राकृतिक खेती है, जिसे गुजरात के राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के आह्वान पर देश के हजारों किसान अपनाकर खुशहाल जीवन जी रहे हैं। देशी गाय पर आधारित आचार्यश्री के **'प्राकृतिक कृषि'** मॉडल पर देश के कृषि विशेषज्ञ और वैज्ञानिक अनेक बार चर्चाएं कर चुके हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह सिद्ध हो चुका है कि प्राकृतिक खेती हर लिहाज से किसान व देश के हित में है। प्राकृतिक खेती में एक देशी गाय के गोबर और गोमूत्र से 30 एकड़ भूमि पर जहरमुक्त और उत्तम गुणवत्ता वाली फसलें ली जा सकती हैं। इतना ही नहीं खेती की इस तकनीक में किसान एक साथ दो अथवा तीन फसलें लेकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकता है।

'प्राकृतिक कृषि' पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पिछले लगभग 3 वर्षों से प्राकृतिक खेती का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिसमें डॉ. हरिओम, डॉ. बलजीत सहारण जैसे वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिकों द्वारा हजारों किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। यहां पर प्राकृतिक खेती के विषय में किसानों को पूरी जानकारी देने के साथ-साथ गुरुकुल के फार्म पर प्राकृतिक खेती का साक्षात दर्शन भी कराया जाता है।

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने 'प्राकृतिक कृषि' को हर किसान तक पहुंचाने का अभियान छेड़ा हुआ है जो एक सराहनीय कार्य है और इसके सुखद परिणाम भी सामने आने लगे हैं। खेती की इस तकनीक से न केवल किसानों की आय बढ़ेगी बल्कि देशी गाय का भी संरक्षण होगा। प्राकृतिक खेती से उत्पन्न जहरमुक्त अन्न, फल, सब्जियों से हम कैंसर, हार्ट अटैक, शुगर, बी.पी. जैसी बीमारियों से बच सकेंगे। भूमि की उर्वरा शक्ति में सुधार होगा साथ ही लगातार घट रहे जलस्तर में वृद्धि होगी क्योंकि खेती की इस तकनीक में किसान 70 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं।

आज जैविक खेती **(ऑर्गेनिक फॉर्मिंग)** के नाम पर किसानों को मूर्ख बनाया जा रहा है। बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जैविक उत्पादों के नाम पर देश की भोली-भाली जनता को ठग रही है। किसानों को जैविक खाद, जैविक पेस्टीसाइड के नाम पर गुमराह किया जा रहा है जबकि जैविक खेती और रासायनिक खेती दोनों ही किसान हित में नहीं है। रासायनिक और जैविक खेती से न तो किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकता है और न ही इससे देश के लोगों का भला हो सकता है। इस स्थिति में अब किसानों के लिए एकमात्र विकल्प 'प्राकृतिक कृषि' का है जिसे अपनाकर किसान खुशहाल हो सकता है। 'प्राकृतिक कृषि' मॉडल को बड़े-बड़े कृषि वैज्ञानिकों ने सराहा है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कृषि फार्म की 50 एकड़ बंजर भूमि भी इस तकनीक से उपजाऊ बन गयी है और वर्तमान में उस जमीन पर गेहूँ की उन्नत फसल लहलहा रही है।

आचार्य देवव्रत जी के आह्वान पर हिमाचल प्रदेश के लाखों और गुजरात में हजारों किसान इस तकनीक को अपना चुके हैं। जब देशी गाय के गोबर-गोमूत्र के साथ कम पानी का उपयोग कर अच्छी खेती की जा सकती है तो फिर किसानों को यूरिया, पेस्टीसाइड, डीएपी व कीटनाशकों पर भारी खर्च करने की क्या आवश्यकता है? एक साथ दो अथवा तीन फसलें होने से किसानों की आय स्वयं ही बढ़ जाएगी, इसके अतिरिक्त जब खाद, कीटनाशक किसान स्वयं ही तैयार कर लेगा तो इन पर होने वाले खर्च से भी मुक्ति मिलेगी। जब फसलों पर कुछ खर्च ही नहीं होगा तो किसान अपने आप आर्थिक रूप से सम्पन्न हो जाएगा और देश उन्नति के शिखर पर होगा। - **रामनिवास आर्य** व्यवस्थापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

अद्भुत है भारतीय वैदिक गणित

प्रदीप दलाल

वैदिक गणित भारत का सबसे पुराना गणित विज्ञान है। यह विज्ञान ऋषि-मुनियों ने हमें दिया था। जब लोग गिनती भी नहीं जानते थे तब हमारे वैज्ञानिक कठिन से कठिन गणनायें क्षणों में हल किया करते थे। वैदिक गणित बड़ी-बड़ी गणनाओं को बहुत ही कम समय में हल कर देता है। तो आइए, जानते हैं क्यों विशेष है वैदिक गणित :-

चुटकियों में बड़ी-बड़ी गणनाएँ : भारत में कम ही लोग जानते हैं पर विदेशों में लोग मानने लगे हैं कि वैदिक विधि से गणित के हिसाब लगाने में न केवल मजा आता है, उससे आत्मविश्वास मिलता है और स्मरण शक्ति भी तेज होती है

जर्मनी में सबसे कम समय का एक नियमित टेलीविजन कार्यक्रम है विसन फोर अख्त। हिन्दी में अर्थ हुआ **'आठ के पहले ज्ञान की बातें'**। देश के सबसे बड़े रेडियो और टेलीविजन नेटवर्क एआरडी के इस कार्यक्रम में हर शाम आठ बजे होने वाले मुख्य समाचारों से ठीक पहले भारतीय मूल के विज्ञान पत्रकार रंगा योगेश्वर केवल दो मिनटों में ज्ञान-विज्ञान से संबंधित किसी दिलचस्प प्रश्न का सहज-सरल उत्तर देते हैं। कुछ दिन पहले रंगा योगेश्वर बता रहे थे कि भारत की क्या अपनी कोई अलग गणित है? वहाँ के लोग क्या किसी दूसरे ढंग से हिसाब लगाते हैं?

भारत में भी कम ही लोग जानते हैं कि भारत की अपनी अलग अंक गणित है-वैदिक अंक गणित। भारत के स्कूलों में वह शायद ही पढ़ाई जाती है। भारत के शिक्षा शास्त्रियों का भी यही विश्वास है कि असली ज्ञान-विज्ञान वही है जो इंग्लैंड-अमेरिका से आता है।

घर का जोगी जोगड़ा... : घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध। लेकिन आन गांव वाले अब भारत की वैदिक अंक गणित पर चकित हो रहे हैं और उसे सीख रहे हैं। बिना कागज-पेंसिल या कैलकुलेटर के मन ही मन हिसाब लगाने का उससे सरल और तेज तरीका शायद ही कोई है। रंगा योगेश्वर ने जर्मन टेलीविजन दर्शकों को एक उदाहरण से इसे समझाया।

उन्होंने कहा मान लें कि हमें 889 में 998 का गुणा करना है। प्रचलित तरीके से यह इतना आसान नहीं है। भारतीय वैदिक तरीके से उसे ऐसे करेंगे -दोनों का सबसे नजदीकी पूर्णांक एक हजार है। उन्हें एक हजार में से घटाने पर मिले 2 और 111, इन दोनों का गुणा करने पर मिलेगा 222, अपने मन में इसे दाहिनी ओर लिखें। अब 889 में से उस 2 को घटाएं जो 998 को एक हजार बनाने के लिए जोड़ना पड़ा। मिला 887, इसे मन में 222 के पहले बायीं ओर लिखें। यही यानि 887222 सही गुणनफल है।

यूनान और मिस्त्र से भी पुराना : भारत का गणित ज्ञान यूनान और मिस्र से भी पुराना बताया जाता है। **शून्य और दशमलव** तो भारत की देन हैं ही, कहते हैं कि यूनानी गणितज्ञ **पाइथागोरस** का प्रमेय भी भारत में पहले से ज्ञात था।

वैदिक विधि से बड़ी संख्याओं का जोड़-घटाना और गुणा-भाग ही नहीं वर्ग और वर्गमूल, घन और घनमूल निकालना भी संभव है। इस बीच इंग्लैंड, अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में बच्चों को वैदिक गणित सिखाने वाले स्कूल भी खुल गये हैं।

नासा की दिलचस्पी : ऑस्ट्रेलिया के कॉलिन निकोलस साद वैदिक गणित के रसिया हैं। उन्होंने अपना उपनाम जैन रख लिया है और ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स प्रान्त में बच्चों को वैदिक गणित सिखाते हैं। दावा है कि अमेरिकी अंतरिक्ष अधिकरण नासा गोपनीय तरीके से वैदिक गणित का कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले रॉबोट बनाने में उपयोग कर रहा है। नासा वाले समझना चाहते हैं कि रॉबोट के दिमाग में नकल कैसे की जा सकती है ताकि रॉबोट ही दिमाग की तरह हिसाब भी लगा सके। उदाहरण के लिए 96 गुणा 95 कितना हुआ...9120, कॉलिन निकोलस साद ने वैदिक गणित पर किताबें भी लिखी हैं। बताते हैं कि वैदिक गणित कम से कम ढाई से तीन हजार साल पुराना है।

चमकदार प्राचीन विद्या : कॉलिन निकोलस साद अपने बारे में कहते हैं कि मेरा काम अंकों की इस चमकदार प्राचीन विद्या के प्रति बच्चों में प्रेम जगाना है। बच्चों को वैदिक गणित अवश्य सीखना चाहिए जिसे हमारे ऋषियों ने उसे हजारों साल पहले विकसित किया था। आप उनसे गणित का कोई भी प्रश्न पूछ सकते थे और वे मन की कल्पना-शक्ति से देख कर फट से जवाब दे सकते थे। उन्होंने तीन हजार साल पहले शून्य की अवधारणा प्रस्तुत की और दशमलव वाला बिन्दु सुझाया। उनके बिना आज हमारे पास कम्प्यूटर नहीं होता। साद ने मानो वैदिक गणित के प्रचार-प्रसार का व्रत ले रखा है 'मैं पिछले 25 सालों से लोगों को बता रहा हूँ कि आप अपने बच्चों के लिए सबसे अच्छा काम यही कर सकते हैं कि उन्हें वैदिक गणित सिखाएँ।' इससे आत्मविश्वास, स्मरणशक्ति और कल्पनाशक्ति बढ़ती है। इस गणित के 16 मूल सूत्र जानने के बाद बच्चों के लिए हर ज्ञान की खिड़की खुल जाती है।

संकलन- **प्रदीप दलाल**
डायरेक्टर प्रेस एवं आईटी सेल, आर्य प्रति. सभा

गुरुकुल परिवार द्वारा 'पद्मश्री डॉ. हरिओम' का भव्य अभिनन्दन

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)–वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम का गुरुकुल कुरुक्षेत्र परिवार द्वारा भव्य अभिनन्दन किया गया। गुरुकुल के कौशल विकास भवन में आयोजित इस समारोह में पहुंचने पर प्रधान राजकुमार गर्ग, निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार, प्राचार्य सुबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य सहित अन्य लोगों ने डॉ. हरिओम का फूल–मालाओं से स्वागत किया, तत्पश्चात् गुरुकुल प्रबधन समिति द्वारा 'ओ३म्' का स्मृति–चिन्ह एवं उपहार भेंट कर उन्हें देश के प्रतिष्ठित सम्मान 'पद्मश्री' के लिए मनोनीत होने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। प्रधान राजकुमार गर्ग ने कहा कि महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के प्राकृतिक कृषि मिशन को सफल बनाने के लिए डॉ. हरिओम लगातार प्रयासरत हैं। लोगों को जहरीली खेती छोड़कर प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण देने वाले डॉ. हरिओम को 'पद्मश्री' पुरस्कार मिलना कुरुक्षेत्र जिला व हरियाणा प्रदेश के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि डॉ. हरिओम हजारों कृषि वैज्ञानिकों व किसानों को प्राकृतिक खेती की ट्रेनिंग देकर उनके जीवन की दशा को परिवर्तित कर चुके हैं जिससे जहां किसानों की आय बढ़ी है वहीं प्राकृतिक खेती से भूमि की उर्वरता, जल स्तर में सुधार के साथ–साथ लोगों को शुद्ध अन्न, फल व सब्जियां प्राप्त हो रही हैं और लोग अनेक प्रकार की बीमारियों से बचे हुए हैं। सबसे अहम बात यह है कि प्राकृतिक खेती से हमारी देशी गाय का संरक्षण हुआ है, किसानों ने फिर से अपने घरों में देशी गाय को बांध लिया है जो एक पुण्य का कार्य है। उन्होंने पुनः समस्त गुरुकुल परिवार की ओर से डॉ. हरिओम को 'पद्मश्री' के लिए मनोनीत होने पर बधाई दी।

स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी

Reg. No. ORG/SC/1712/002449A

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का प्रसिद्ध उत्पाद **हर्बल चाय**

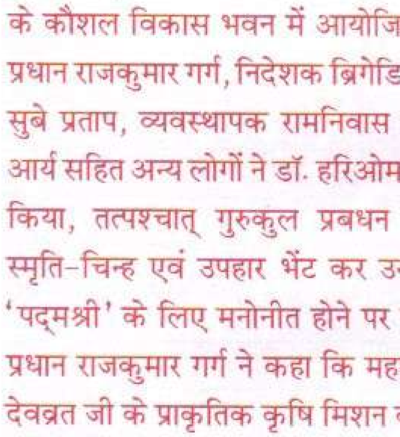

गुरुकुल कुरुक्षेत्र फार्मेसी द्वारा निर्मित हर्बल चाय अपने विशेष गुणों के कारण लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है। इसके मनमोहक स्वाद और अविश्वसनीय औषधीय गुणों के कारण सदियों से लोग इसका सेवन करते आए हैं। पीने में स्वादिष्ट होने के साथ–साथ यह पोषक तत्त्वों से युक्त है। हर्बल चाय न केवल आपके शरीर में तरल पदार्थ की पूर्ती करती है, बल्कि इसमें मौजूद पोषक तत्त्व आपको अनेक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं।

***घटक द्रव्यः** हर्बल चाय में मौजूद अदरक दर्द निवारक का काम करता है, खांसी में लाभदायक है। काली मिर्च जो दीपन, पाचन का काम करती है। इसके सेवन से आमाशयिक रस की वृद्धि होती है और पाचन क्रिया सुधरती है।*

***हर्बल चाय** में मौजूद सौंप का प्रयोग अजीर्ण, पेट में गैस बनना, खांसी, मुख विकार आदि रोगों में किया जाता है। मुलेठी का प्रयोग भी विभिन्न प्रकार की बीमारियां जैसे गले व फेफड़ों में जमे हुए कफ को बाहर निकालने, गला बैठ जाना, श्वास नालिकाओं में सूजन आदि में होता है। तुलसी जमे हुए कफ को साफ करती है, बुखार, लीवर का बढ़ जाना जैसे रोग में लाभदायक है। हर्बल चाय के सेवन से आपके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है।*

हर्षोंलास से सम्पन्न हुआ 12वीं का दीक्षान्त समारोह

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में 12वीं के छात्रों का दीक्षान्त समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। समारोह में जहां महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी, निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार सहित सभी अधिकारियों व अध्यापकों ने छात्रों को गुरुकुलीय दिनचर्या और संस्कारों को अपने जीवन में आत्मसात करते हुए देश के सभ्य नागरिक बनने का आशीर्वाद दिया, वहीं छात्रों ने भी अपने गुरुजनों के सम्मान में अनेक गीत, कविता और मुक्तक प्रस्तुत किये। समारोह में छात्रों की शानदार प्रस्तुति को यहां शब्दों में बांधने का प्रयास किया है, आप भी पढ़े और छात्रों की शानदार तुकबंदी का लुत्फ उठाएं:-

जब पहला पग पड़ा गुरुकुल में तब मैं कोरा पन्ना था,
मुझे भी शिक्षा ग्रहण करके एक अच्छा इंसान बनना था,
हां, साथ दिया मेरे शिक्षकों ने और सिखाई नई बात मुझे,
अपनी लिखी कुछ पंक्तियों से मैं नमन करूंगा आज उन्हें।

माननीय निदेशक महोदय, प्रधानाचार्य जी, सभी शिक्षकगण और मेरे प्यारे साथियों! आप सभी को मेरा सादर प्रणाम। मैं आदित्य, दीक्षान्त समारोह के अवसर पर एक कविता आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ, कविता की एक-एक लाइन मेरे दिल के बहुत करीब है। कविता की शुरुआत एक शायरी से करना चाहूंगा :-

जिसके प्रति मन में सम्मान होता है,
किसी डांट में भी एक अद्‌भुत ज्ञान होता है
जन्म देता है कई महान शक्सियतों को यारों,
वो गुरु तो सबसे महान् होता है
आज वक्त को रोकने को जी चाहता है,
न जाने आज कुछ छूट जाने से डर लगता है
बच्चे बनकर ही तो आए थे हम सब,
एक-दूसरे से कितने पराये थे हम सब,
स्कूल के कुछ दिनों में ही हम एक हो गये
और हंसने-खेलने के बहाने अनेक हो गये।

सूरज की पहली किरण से शुरुआत थी हमारी,
पूरे दिन की पढ़ाई मस्ती फिर रात थी हमारी,
सोचते थे कि जल्दी यहां से चले जाएंगे,
नहीं मालूम कि आगे ये समा पाएंगे या नहीं पाएंगे।

गुरुकुल में आने पर रह-रहकर घर की याद सताती थी,
भोजन की थाली में भी माँ की तस्वीर नजर आती थी,
याद आएगा कि हम सबको यूँ गुरुकुल से चले जाना,
वो मेस का खाना और दोस्तों का मुझे सी.के.डी बुलाना,
वो वार्डन सर का हमें जगाना और जगकर फिर सो जाना।

आगे की पंक्तियों पर जरा गौर करना...

वो अशोक सर का टेस्ट लेना, सबके होश उड़ाता था,
पर उनका सभी डाउट क्लीयर करना भी तो हमें भाता था,
राहुल सर की केमेस्ट्री हमारे लिए एक मिस्ट्री ही रह गई,
उनके साथ बिताई वो प्यारी यादें अब हिस्ट्री हो गई।
आनन्द सर के मैथ ने भी हमें बहुत सताया,
पर इसको भी आनन्द सर ने बहुत प्यार से पढ़ाया।
श्रवण सर के साथ हमने एन.सी.सी का सफर किया
और सर ने भी हमारी हर गलती को कवर किया।
आठ बजते ही नींद उड़ जाती है,
जब मान सर के पीरियड की बारी आती है
केरियर डाउट्स, ये क्या होता है??
हमनें गुरुजी के साथ इंग्लिश का खेत जोता है।

लाइफ हो या बायलॉजी,
जब-जब डाउट्स का बादल छाया है
उस वक्त केवल पंकज धीर जी
का नाम ही जुबा पर आया है,
कोई भी चैप्टर हमसे बच न पाया
क्योंकि बनी रही गुरुदेव की छाया।

पूरे दिन में हम जिसका सबसे ज्यादा इंतजार करते थे वह था संजीव सर का पीरियड...

संजीव सर के पीरियड में हमने न जाने क्या-क्या किया
सर की प्यारी स्माइल ने हम सबके दिल पर राज किया,
सर का वो प्यार और दुलार अब हम कहां देख पाएंगे,
सर के साथ बिताए वो दिन हमें बहुत याद आएंगे।
बोर न हो जाएं इसलिए बीच-बीच में
अपने किस्से सुनाकर हंसाना,
अब कैसे उन्हें धन्यवाद करें और क्या दें उन्हें हम नजराना।
याद आएगा वो शनिवार को मूवी देखना
और बिना नहाए ही नहाए जैसे दिखना।

कभी सोचा भी न था कि ये पल भी आएगा,
दोस्तों और टीचर्स का साथ यहीं तक रह जाएगा,
जिन बातों का दुःख था आज उन पर हंसी बहुत आती है,

(शेष पृष्ठ 14 पर)

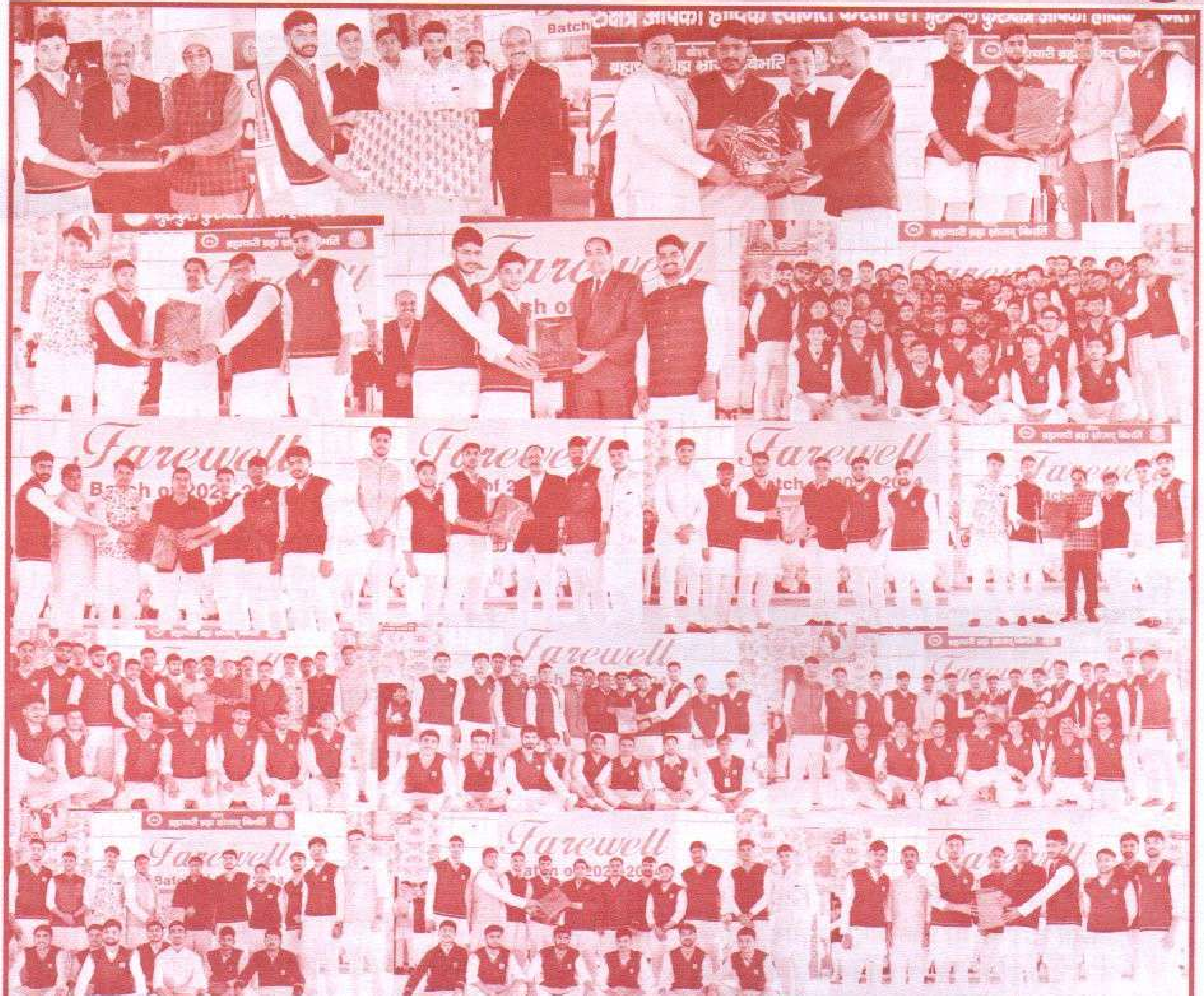
Farewell

Farewell

न जाने क्यों उन पलों की याद खूब सताती है,
कहता था बड़ी मुश्किल से ये तीन साल सह गया,
आज लगता है यारों कुछ पीछे रह गया,
मुझे सी.के.डी. अब कौन बोला करेगा,
अलग-अलग नामों से अब कौन पुकारा करेगा।

वो अंकुश को गोदाम बुलाने का किस्सा
और जोगिन्द्र की लंबी नाक का हिस्सा
अब ये सारी बातें कहां कर पाएंगे,
ये समय लगता है यारों आज जल्दी बीत गया,
आज ये एक बार फिर मुझसे जीत गया।

पहुंच जाओगे जब अपनी मंजिल पर
जब ये यार-दोस्त ही याद आएंगे।
एक कप चाय की चुस्की के साथ,
ये सारे फसाने याद आएंगे,
पर न जाने क्यों दोस्तों, कुछ पीछे छूट-सा रहा है,
चेहरे पर तो मुस्कान है पर दिल में कुछ टूट रहा है।

हॉस्टल का कमरा भी अब खाली करना पड़ेगा
आ गया वो मोड़ जिसमें अलविदा कहना पड़ेगा
आखिर आ ही गया वो दिन जिसका हमें इंतजार था,
अब बिछड़ जाएंगे यार सारे जिनसे हमें बहुत प्यार था।

मेरे दास्तों जरा ठीक से देख लो, कहीं कुछ छूटा ना हो,
कहीं तुम्हारी वजह से किसी का दिल टूटा ना हो,
भूल कर सारी रंजिशें आज गले मिल लो
और एक बार फिर से मिलने का वादा कर लो।
रोशनी बनकर आए जो हमारी जिन्दगी में
ऐसे गुरुओं को प्रणाम करता हूं,
जमीन से आसमां तक पहुंचाने का रखते हैं
जो हुनर ऐसे टीचर्स को मैं दिल से सलाम करता हूं।

बारिश ऐसे हो कि समन्दर में उफान आ जाए और
तालियां ऐसी बजे कि मेहफिल में जान आए जाए...
आज का यह अवसर बड़ा निराला है,
आज यहां पर नूर बरसने वाला है,
जोरदार तालियां बजा दो एक बार क्योंकि
अब कार्यक्रम शुरू होने वाला है...

जिन्दगी में कभी खुशी कभी गम होता है
और तालियां वो बजाते हैं जिनके हाथों में दम होता है...
हिन्दुस्तानियों का नशा चाय की प्यालियों में होता है
और कलाकारों का नशा आपकी तालियों में होता है...

गुमनामी के अंधेरे में था पहचान बना दिया
दुनिया के गम से मुझे अनजान बना दिया
उनकी ऐसी पा हुई इस नाचीज पर कि
गुरु ने मुझे एक अच्छा इंसान बना दिया।

अन्त में छात्रों के अलग-अलग समूह ने अपने शिक्षकों के साथ सामूहिक छायाचित्र करवाया जिससे वे गुरुकुल की यादों को हमेशा अपने साथ संजो कर रख सकें। सभी अध्यापकों ने छात्रों को जीवन में हमेशा उन्नति करते रहने का शुभाशीष दिया। शांति पाठ के साथ समारोह का समापन हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी गुरुकुल का श्रेष्ठ उत्पाद

अविपत्तिकर चूर्ण

घटक द्रव्य : *सौंठ, पीपल, काली मिर्च, हरड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, बिड़ नमक, बायविडंग, छोटी इलायची, तेजपात, लौंग, निशोथ की जड़, मिश्री को कूटकर कपड़छन चूर्ण बनाकर रख लें।*

मात्रा और अनुपान : *3-3 ग्राम सुबह-शाम ठण्डे पानी, धारोष्ण दूध या कच्चे नारियल के जल के साथ लें। यदि आवश्यकता हो तो रात को सोते समय भी ले सकते हैं।*

गुण एवं उपयोग : *अम्लपित्त और शूल रोग में पहले इस चूर्ण से विरेचन कराकर पीछे से अन्य दवायें देने में अच्छा लाभ होता है। यह पैत्तिक विकारों के लिए बहुत उपयोगी है। अम्लपित्त में पित्त की विकृति से ही यह रोग बढ़ता है। उस विकृति को दूर करने के लिए इस चूर्ण का उपयोग किया जाता है। यह विरेचन होने के कारण दस्त भी साफ लाता है और कब्जियत दूर करता है। इस चूर्ण के सेवन से जठराग्नि प्रदीप्त होती है।*

माता निर्माता भवति

माता ही अपने बच्चे का निर्माण करनेवाली होती है। प्राचीन इतिहास में सबसे सुन्दर उदाहरण 'मदालसा' देवी का है। 'मदालसा' के तीन पुत्र हुए। उनके नाम रखे गये विक्रान्त, सुबाहु और अरिदमन। माता अपने पुत्रों को लोरी सुनाते हुए कहती हैं:-

'शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि'
'संसारमायापरिवर्जितोऽसि'
'संसारमायां त्यज मोहनिद्रां'
'मदालसोल्लपमुवाच पुत्रम्'

भावार्थ :- हे पुत्र! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन अर्थात् निर्दोष है, संसार की माया से रहित है। इस संसार की माया को त्याग दे। उठ, खड़ा हो, मोह को परे हटा। इस प्रकार का सम्बोधन देवी मदालसा अपने पुत्रों से करती हैं।

शुद्धोऽसि रे तात न तेऽस्ति नाम
कृतं हि यत् कल्पनयाधुनैव।

भावार्थ:-हे प्रिय पुत्र! तू शुद्ध स्वरूप आत्मा है परन्तु तेरा नाम (विक्रांत, सुबाहु, अरिमर्दन) शुद्ध नहीं है बल्कि ये आजकल की कल्पनाओं के आधार पर रखा गया है।

माता मदालसा की इस शिक्षा का परिणाम क्या हुआ? तीनों पुत्र राज-पाट का मोह त्यागकर वनों को चले गये। यह स्थिति देख महाराज ने कहा-देवी! राज-पाट कौन सम्भालेगा, क्या सबको संन्यासी बना देंगी?

जब देवी मदालसा को चौथा पुत्र हुआ तब उन्होंने उसका नाम रखा-अलर्क। माता ने उसे राजनीति का उपदेश दिया। उसे लोरी देते हुए माता मदालसा कहती थी:-

'धन्योऽसि रे यो वसुधामशत्रु'
'रेकश्चिरं पालयिताऽसि पुत्र !'
'तत्पालनादस्तु सुखोपभोगो'
'धर्मात् फलं प्राप्स्यसि चामरत्वम्'
(मार्कण्डेयपुराण 26/35)

भावार्थ :-हे पुत्र! तू धन्य है जो अकेला ही शत्रुओं से रहित होकर इस पृथिवी का पालन कर रहा है। धर्मपूर्वक प्रजापालन से तुझे इस लोक में सुख और मरने पर मोक्ष की प्राप्ति होगी। राज्य की उत्तम व्यवस्था का उपदेश देते हुए माता मदालसा कहती हैं -

'राज्यं कुर्वन् सुहृदो नन्दयेथाः'
'साधून् रक्षंस्तात! यज्ञैर्यजेथाः।'
'दुष्टान्निघ्नन् वैरिणश्चाजिमध्ये'
'गोविप्रार्थे वत्स! मृत्युं व्रजेथाः'
(मा0 पु0 26/41)

जयपाल आर्य

भावार्थ-हे पुत्र! तू राज्य करते हुए अपने मित्रों को आनन्दित करना, साधुओं, श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा करते हुए खूब यज्ञ करना। गो और ब्राह्मणों की रक्षा के लिए संग्राम-भूमि में शत्रुओं को मौत के घाट उतारता हुआ तू स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त हो जाना।

दुर्भाग्य की बात है कि आज माताएं अपने कर्त्तव्यों को भूलती जा रही हैं। आज माता-पिता को अपने बच्चों को गोद लेने में शर्म आती है। बच्चे नौकरानी अथवा (आया) की गोद में पलते हैं। परिणामस्वरूप बालकों का सुनिर्माण नहीं हो पाता।

बालकों पर घर के वातावरण, रहन-सहन और

आचार-विचार का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। जो माता-पिता आदि स्वयं किसी को '**नमस्ते**' नहीं करते। जिन परिवारों में माता-पिता देर से उठते हैं वहाँ बच्चे भी देर से उठते हैं। जो पिता बीड़ी, सिगरेट, मद्य-मांस आदि का सेवन करते हैं उनके बच्चे भी इन दुर्गुणों से बच नहीं सकते। इसके विपरीत जिन परिवारों में सन्ध्या और यज्ञ होता है, आसन और प्राणायाम का अभ्यास होता है उन परिवारों के बच्चों में भी वेसे ही गुण विकसित हो जाते हैं।

यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे श्रेष्ठ, सदाचारी और आदर्श नागरिक बनें तो माता-पिता को स्वयं अपने जीवन में परिवर्तन लाना होगा। माता-पिता को अपने आचरण के द्वारा उन्हें शिक्षा देनी होगी। बच्चों को सदाचारी, सभ्य और श्रेष्ठ बच्चों की संगति में रखना चाहिए, दुराचारी, असभ्य और गुणहीन बच्चों की संगति से अपने बच्चों को दूर रखें।

संकलन -**जयपाल आर्य**
वरिष्ठ भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

साभार- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

प्राकृतिक चिकित्सा का अभिन्न अंग 'उपवास'

डॉ. देव आनन्द

भारतीय संस्कृति तथा वैदिक परम्परा में उपवास की महत्ता अत्यन्त विश्रुत है तथा जन-जन की धार्मिक भावना उसे किसी न किसी रूप में किसी न किसी दिन उपवास की ओर आकर्षित जरूर करती है। उपवास को वर्तमान की रूढ़िवादी परम्परा में धार्मिक कृत्य के रूप में स्वीकार करके धार्मिकता का चिह्न मान लिया गया है। वर्तमान में देवी-देवताओं के नाम पर विभिन्न व्रत एवं उपवास प्रचलित दिखाई देते हैं। व्रत एवं उपवास के साथ तरह-तरह की पूजा-पद्धतियों का भी प्रचलन है किन्तु यदि हम उपवास पर बहु आयामी व्यापक दृष्टि डालें तो पायेंगे कि उपवास मात्र कर्मकाण्डी आस्था, विश्वास से सम्बंधित धार्मिक कृत्य नहीं अपितु शरीर के लिए अत्यन्त आवश्यक आचरणीय विधि है जिससे शरीर में होने वाले बहुविध रोगों की चिकित्सा (उपचार) करके शरीर की रोगप्रतिरोधक शक्ति में आश्चर्यजनक वृद्धि की जा सकती है।

यद्यपि उपवास का इतिहास सुदीर्घ अज्ञात काल से संबद्ध है, पुनरपि वर्तमान वैज्ञानिक युग उपवास के माहात्म्य तथा चिकित्सा विधि से विगत शताब्दी में ही परिचित हुआ, जब सिल्वेस्टर ग्राहम, डॉ. जोयल, डॉ. जॉन कोयम, डॉ. ए. गुथेल्पा, बर्नर मैकफेडेन जैसे लब्धप्रतिष्ठ चिकित्साशास्त्रियों ने पाश्चात्य जगत् में उपवास पर अनुसंधान कर उसकी महत्ता प्रतिपादित करते हुए विभिन्न रोगों का सफल उपचार किया।

प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों व उपवास की प्रक्रिया के सम्बंध में बर्नर मैकफेडेन ने लिखा है -'प्राकृतिक चिकित्सा की सारी विधियाँ इस मूलभूत तथ्य पर आधारित हैं कि प्रकृति सबसे प्रधान आरोग्यकारी माध्यम है और चिकित्सा की कोई भी विधि तभी सफल हो सकती है जबकि वह प्रकृति के काम में बाधा पहुँचाने की बजाय उसे सहायता पहुंचाये। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर शरीर के विभिन्न मल निष्कासक अंगों का काम तेज कर दिया जाता है और कुछ काल विशेष तक रोगी को भोजन न देकर उसके शरीर में और अधिक जहरीला पदार्थ पहुँचाने से बचाया जाता है और इस बीच में शरीर की शक्ति भोजन के पाचन से बचाकर रोगों को दूर करने में खर्च की जाती है।' **डॉ. डी.बी.** इसके सम्बंध में कहते हैं -'**बीमार आदमी के पेट से भोजन अलग करके तुमने बीमार आदमी को नहीं, बल्कि बीमारी को भूखा मारना शुरू कर दिया है।'**

सामान्यतः लोग सोचते हैं कि रोगी को भोजन देकर वे उसे कमजोरी से बचा रहे हैं, किन्तु स्थिति इससे सर्वथा विपरीत है, रोगी व्यक्ति को भोजन देकर हम उसकी क्षीण शक्ति का अपव्यय कर उसे और अधिक कमजोर कर रहे होते हैं इसलिए आधुनिक एवं पुरातन चिकित्सा विज्ञान दोनों ही रोगी को निराहार (उपवास) रहने अथवा बिल्कुल हल्का भोजन करने की राय देते हैं।

नेचयरकेयर विशेषज्ञ बर्नर मैकफेडेन, उपवास चिकित्सा नामक पुस्तक में उपवास से होने निम्नलिखित लाभों की चर्चा करते हैं -'उपवास का लाभ सबसे पहले हमारे फेफड़े अनुभव करते हैं। उपवास प्रारम्भ करते ही फेफड़ों का सारा अवरोध समाप्त हो जाता है। सांस अधिक स्वच्छन्द व निर्बाध गति से आती-जाती है। उपवास करने वाले रोगी का स्वर स्वच्छ, मधुर और गंभीर हो जाता है। उपवास की अवधि में फेफड़े विकारों को बड़ी तीव्रता से निष्कासित करते हैं और शुद्धिकरण की इस प्रक्रिया में फेफड़ों में ओषजन अधिक पहुंचता है और रक्त प्रणाली निरन्तर स्वच्छ होती चली जाती है। हृदय के रोगी, शारीरिक विकारों के निष्कासित होते जाने के कारण अधिक स्वस्थ और सशक्त अनुभव करते हैं। उपवास का मल प्रणाली पर भी प्रभाव पड़ता है। आहार के बन्द होते ही निचला आमाशय संकुचित हो जाता है।'

उपवास द्वारा हमारी इन्द्रियां अत्यन्त सक्रिय हो उठती हैं। बहुत से रोगी उपवास के उपरान्त ज्यादा अच्छा देख सकते हैं, ज्यादा अच्छा सुन सकते हैं और ज्यादा अच्छी तरह सूंघ सकते हैं। उपवास के प्रारम्भिक दिनों में लाल रक्त कोषाणुओं की संख्या बढ़ जाती है। उपवास द्वारा रक्त शोध, उदर रोगों में अभूतपूर्व लाभ हुआ है। उपवास के दिनों में खुली हवा में रहते हुए सूर्यताप का सेवन करना अत्यन्त हितकर होता है। कब्जियत के दिनों में उपवास से अच्छा कोई उपचार नहीं। उपवास के दिनों में शरीर के सभी कोषांग शरीर के मल के निस्तारण में लग जाते हैं। शरीर मल-मूत्र, स्वेद, थूक आदि के माध्यम से अनावश्यक मल तत्त्वों का निष्कासन करता है।

उपवास एक पूर्ण प्राकृतिक चिकित्सा विधि है जिससे मधुमेह, बुखार, सिरदर्द, कोष्ठबद्धता सहित सामान्य व विशेष रोगों के उपचार किये जा सकते हैं। उपवास न केवल शारीरिक अपितु मानसिक व आत्मिक चिकित्सा के लिए भी हितकर है, अतएव प्राचीनकाल में विभिन्न पद्धतियों में शारीरिक उत्कर्ष हेतु भी इसका विधान किया है।

-**डॉ. देव आनन्द** मुख्य चिकित्सा अधिकारी
स्वामी श्रद्धानन्द योग, आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक चिकित्सालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

नचिकेता के तीन वरदान

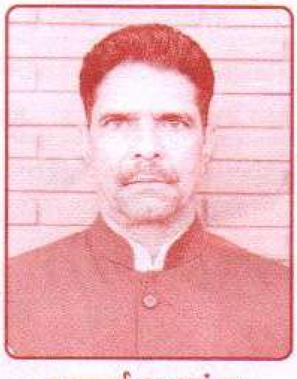

आचार्य दयाशंकर

गतांक से आगे... कहने का भाव यह है कि जीवन बीत जाता है किन्तु हम अपने परिचय से कोसों दूर रहते है और जिस परिचय को लेकर घूम रहे हैं, वह सब नकली परिचय है इसीलिए जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो यही कहा जाता है कि अमुक नाम, परिचय वाला मर गया जो परिचय लिए घूम रहे है, जीवन के साथ वह भी मर गया इसीलिए पिता कहता है-हे पुत्र! इन सांसों के रहते अपने से अपना परिचय कर लेना, अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेना। वेद कहता है-

श्रृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ येधामानि दिव्यानि तस्थुः।

(यजु0 अ0 11, मंत्र 5)

अर्थात् हम सब अमृत, अजर, अमर, सर्वशक्तिमान, परमेश्वर के पुत्र हैं, अतः मैं आत्मा भी अजर, अमर हूँ।

इस संसार में जो व्यक्ति इस वेद मंत्र के भाव को समझ लेता है और उसे यह सम्यक् ज्ञान हो जाता है कि संसार का प्राणी मात्र उस अजर, अमर सत्ता परमपिता परमेश्वर का पुत्र है, इस नाते वह भी अजर और अमर है, वह जन्म लेकर एक रथ पर सवार होकर अपने घर की ओर बढ़ना चाहता है, यह शरीर मात्र रथ है, जो कि उसे उसके घर तक पहुंचाने का साधन है और यह समस्त सांसारिक पदार्थ, खानपान आदि सभी इस रथ को मजबूत रखने के साधन मात्र हैं। तब वह भोग से अपवर्ग ध्येय मार्ग की ओर बढ़ जाता है और जैसे कोई बड़ा भाई अपने छोटे भाई को अपने साथ-साथ लक्षित मार्ग की ओर लेकर बढ़ता है, उसी प्रकार समस्त प्राणियों पर उसका दयाभाव होता है और कोई महर्षि दयानन्द सरीखा महापुरुष संगठन सहित अपने साथ समाज को सही मार्ग दिखाकर जगत कल्याण कर देता है और ये सभी शक्ति सामर्थ्य 'ओ३म्' इस पद का जाप एवं ध्यान करने से ही प्राप्त हो सकता है।

गौणिक नामों को पुकारने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा। भगवान् श्रीकृष्ण ने इसी अक्षर को मुक्तिमार्ग का द्वार बताया है-

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
य प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।।

(गीता, अध्याय 8, श्लोक-13)

अर्थात् ओ३म इस एक मात्र परमब्रह्म अक्षर का हृदय अन्तस्थ आत्मभाव से परमेश्वर का चिन्तन करते हुए अर्थात् अन्तकाल में परमब्रह्म के 'ओ३म' इस प्रमुख नाम का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करता है, वह परम गति (मुक्ति) को प्राप्त करता है। यहां 'मामनुस्मरन्' ये शब्द श्रीकृष्ण अपने लिए नहीं अपितु परमेश्वर के लिए कह रहे हैं। जैसे रामलीला आदि नाटक में राम का अभिनय करने वाला व्यक्ति राम नहीं होता फिर भी स्वयं को राम कहता है, यहां श्रीकृष्ण भी एक पात्र है जो ईश्वर का अभिनय कर रहे है। इस प्रकार आचार्य यम ने नचिकेता को ब्रह्म के 'ओ३म्' पद की महिमा बताकर उसकी प्राप्ति कर उसके प्रसाद अर्थात् लाभ की चर्चा करते हैं।

एतद्धेवाक्षरं ब्रह्म एतद्धेवाक्षरं परम्।
एतद्धेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।।

यही अक्षर ब्रह्म (परमेश्वर) है। यही ओ३म् अक्षर परम पद है अर्थात् इससे आगे और कोई पद शेष नहीं रहता। इसी अक्षर अविनाशी शाश्वत ब्रह्म को जानकर जो व्यक्ति जो चाहता है उसे सरलता से प्राप्त कर लेता है। यजुर्वेद का मंत्र भी इसकी पुष्टि करता है:-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

(यजुर्वेद अ0 31, मंत्र 18)

इस परम अक्षर 'ओ३म्' को जिसने जान लिया, उस परमानन्द का जिस दिव्य पुरुष ने अनुभव कर लिया, वह सांसारिक लोगों को अपना संदेश देता है कि उस परम अक्षर अविनाशी ओ३म को मैंने जान लिया है। वह सहस्रो सूर्य की आभा वर्ण वाला है। ये जितने भी सौरमण्डल में सूर्य, तारे, ग्रह आदि हैं, ये सभी उसी के तेज से चमक रहे हैं। वह तमस अंधकार से परे है, उस परम तत्त्व को जान लेने पर मृत्यु के पार चला जाता है।

वास्तव में मृत्यु की छलांग बहुत छोटी है, यह मात्र उनको खा जाती है जिसको जन्म देती है किन्तु जो जन्म से परे है, उसे छू भी नहीं सकती। अन्तर यह है कि जब **'एतं पुरुषं वेद'** उस परम पुरुष को जान लेता है तो ये मृत्यु उससे बहुत परे रहती है, इस मृत्यु से पार जाने का एकमात्र ब्रह्मचर्यपूर्वक तप का मार्ग है और कोई दूसरा मार्ग नहीं। अतः ब्रह्मचर्य तप द्वारा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने का प्रयत्न सदा करते रहना चाहिए। यह 'ओ३म्' नाम ब्रह्म ही सर्वश्रेष्ठ वास्तविक आलम्बन, एकमात्र सहारा है इस तथ्य को समझाते हुए ऋषि यम कहते हैं:-

एतदालम्बनं श्रेष्ठं एतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

आचार्य यम कहते हैं –हे नचिकेता ! जिस ब्रह्म अविनाशी तत्त्व परमेश्वर के '**ओ३म्**' अक्षररूप की व्याख्या तथा विस्तार बताया है, उसी ब्रह्म (ओ३म्) का आलम्बन अति श्रेष्ठ है, इसी का आलम्बन (सहारा) सर्वोपरि है, इसके आश्रम को जानकर मुक्ति प्राप्त लोग ब्रह्मलोक अर्थात् मुक्ति लोक में अत्यन्त प्रशंसित होकर आनन्द का अनुभव करता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य ही नहीं अपितु जगत् के समस्त प्राणी सुख के पीछे दौड़ रहे हैं, दु:ख कोई नहीं चाहता फिर भी दु:ख आते हैं। प्रयत्न करता आनन्द का किन्तु मिलता है दु:ख। क्या कभी ऐसा हो सकता है कि बीज बोये कुछ, और फल प्राप्ति हो कुछ, आम के बीज पर आम के फल ही होंगे, कांटेदार बबूल नहीं, ऐसे ही आनन्द का बीज बोया तो दु:ख क्योंकर प्राप्त होंगे, इसका सीधा–सा अर्थ है कि बीज को पहचानने में प्राय: भूल होती है, यहां आनन्द का बीज '**ओ३म्**' बताया गया है किन्तु दु:खों की निवृत्ति के उपाय उससे हटकर करेंगे तो सुख कैसे प्राप्त होगा।

योगदर्शन में '**तस्य वाचकः प्रणवः**' बताकर यह भी कहा है–'**तज्जपस्तदर्थ भावनम्**' उस ओ३म का जाप तथा उसके सर्वरक्षक, दु:खनाशक, आनन्ददायक आदि–आदि अर्थों का ध्यान एवं उन गुणों को अपने अन्त:करण में धारकर व्यवहार रूप जीवन में लाना यह भी आवश्यक है, हम लोग बहुत बड़ी भूल करते हैं कि सांसारिक पदार्थों को मांगने के लिए यज्ञ, पूजा–पाठ, मंदिर आदि में जाते है, ईश्वर तो कहता है यदि तुम्हें सांसारिक पदार्थ चाहिए तो मेरे पास आने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उन पदार्थों को तो जो मुझसे बहुत दूर है, वे लोग अधिक मात्रा में प्राप्त कर रहे हैं।

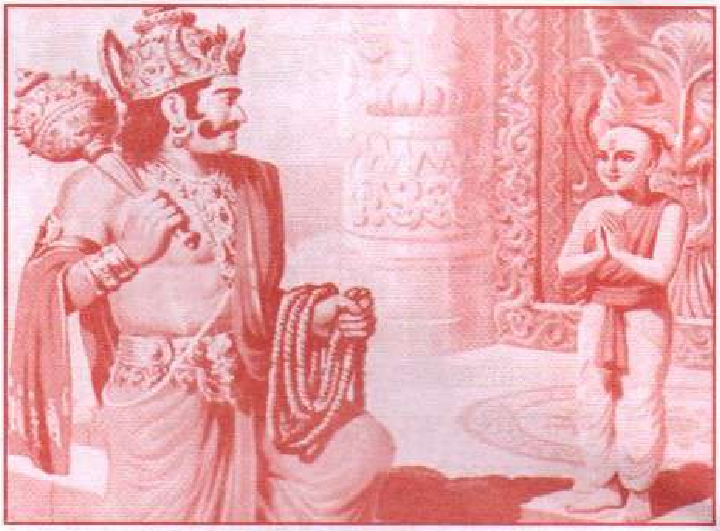

वे पदार्थ तो परिश्रम करने से मिलते हैं किन्तु जिनको आनन्द चाहिए, मात्र वो ही मेरे पास आए क्योंकि आनन्द उन पदार्थों में नहीं है। इसीलिए नचिकेता ने परमपद् की प्राप्ति के लिए आचार्य यम द्वारा दिये जाने वाली सभी प्रकार की भौतिक सम्पत्ति को ठोकर मारकर मुक्ति मार्ग (श्रेयमार्ग) को चुना।

अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम्।
महान्तं विभुमात्मानं मत्त्वा धीरो न शोचति।।

वह परमतत्त्व परमानन्द स्वरूप परमात्मा शरीर अर्थात् साकार पदार्थों में निराकार तथा चलयमान पदार्थों में अचल भाव से रहता है, उस सर्वव्यापक महान् परमात्मा को 'ओ३म्' इस परम् अक्षर के ध्यान एवं जाप से, प्राणायाम तथा योगाभ्यास आदि क्रियाओं द्वारा जान लेने पर धीर (स्थिर) बुद्धियुक्ति योगयुक्त आत्मा शोकादि दु:खों से पार हो जाता है।

–आचार्य दयाशंकर
संस्कृत विभागाध्यक्ष, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी **गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 100% शुद्ध**

एलोविरा जूस

एलोविरा जूस स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। एलोविरा कॉलेस्ट्रोल, उक्तचाप और मधुमेह के विरुद्ध प्रभावशाली है। प्रत्येक व्यक्ति जिसे अपचन की समस्या रहती है, एलोविरा के रस का नियमित सेवन करें। यह शरीर के विषैले पदार्थों को बाहर निकाल कर आपके शरीर को ओजपूर्ण बनता है। यकृत को स्वस्थ रखने में मदद करता है साथ ही आपके प्रतिरक्षातंत्र को मजबूत बनाता है।

***मात्रा व अनुपान :** 15 मिली. एलोविरा जूस का दिन में दो बार ताजे पानी के साथ सेवन करें।*

***गुण :** एलोविरा तिक्त, मधुर, शीतवीर्य, भेदन, दीपन, पाचन बल्य, शोथहर, व्रणरोपण, आंखों के लिए हितकर होता है। इससे लीवर की क्रिया सुधरती है। पाचन क्रिया को ठीक कर पेट को साफ रखता है। स्त्रियों के विकास जैसे अनार्तव, पांडु, विबन्ध में एलोविरा जूस का सेवन बहुत लाभदायक होता है।*

गुरुकुल पहुंची यूपी की राज्यपाल, प्राकृतिक खेती का किया अवलोकन

गुरुकुल को नवीन स्वरूप प्रदान करने और प्राकृतिक खेती मुहिम को लेकर आचार्य श्री देवव्रत जी के प्रयासों की सराहना की

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)-उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं गुजरात की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल गुरुकुल कुरुक्षेत्र के विशेष दौरे हेतु पहुंचीं। गुरुकुल पहुंचने पर ओएसडी टू गर्वनर गुजरात डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य, गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार, प्राचार्य सुबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य एवं मुख्य संरक्षक संजीव आर्य ने बुके देकर राज्यपाल महोदया का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर धर्म सिंह, रमेश चंद, महावीर मलिक, आनन्द सिन्हा, संदीप कुमार, पंकज कुमार, नवदीप मान, रमन कुमार, सुरेश कुमार, शुभम् आर्य, अनिल कुमार, अशोक कुमार, महक सिंह, हरि कुमार दिलबाग सिंह, संरक्षक महावीर आर्य, दिनेश आर्य, जतिन आर्य, सुन्दर लाल आदि उपस्थित रहे। डॉ. राजेन्द्र ने महामहिम राज्यपाल महोदया को आचार्य श्री देवव्रत जी द्वारा लिखित 'प्राकृतिक खेती' पुस्तक भी भेंट की। डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार के नेतृत्व में महामहिम राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने गुरुकुल की गोशाला, अश्वशाला, एनडीए एवं कॉम्पीटेटिव विंग, आर्ष महाविद्यालय और नेचरकेयर का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पर विस्तृत चर्चा की और बालिकाओं की शिक्षा भी गुरुकुलीय पद्धति से हो, ऐसा सुझाव दिया। गुरुकुल परिसर के उपरान्त राज्यपाल महोदया प्राकृतिक कृषि फार्म पर पहुंची जहां पर डॉ. हरिओम ने आचार्य श्री देवव्रत जी के मार्गदर्शन में चल रहे प्राकृतिक कृषि मिशन के विषय में विस्तार से बताया। फार्म पर राज्यपाल महोदया ने 'कमलम्' फल की खेती में विशेष रुचि दिखाई। यहां पर एक ही समय में कई फसलों के मॉडल को देखकर भी राज्यपाल आनंदीबेन ने प्रशंसा की। उन्होंने डॉ. हरिओम से प्राकृतिक और जैविक खेती के बीच मुख्य अन्तर को लेकर सवाल किया जिस पर डॉ. हरिओम ने सरल शब्दों में बताया कि जैविक के नाम पर तथाकथित कंपनियां किसान को लूट रही हैं और मोटे दाम पर जैविक खाद व दवाइयां बेच रही हैं जबकि प्राकृतिक खेती में गोमूत्र और गोबर से बनाये जाने वाले जीवामृत और घनजीवामृत के प्रयोग से ही फसलों को सभी आवश्यक तत्त्वों की पूर्ति हो जाती है। प्राकृतिक खेती में किसान को लाभ ही लाभ है, कोई अतिरिक्त खर्च नहीं जबकि जैविक खेती बहुत खर्चीली है। अन्त में गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग ने राज्यपाल महोदया को गुरुकुल पधारने पर आभार व्यक्त किया।

वैदिक धर्म की विशेषताएं

जसविन्द्र आर्य

समाज में आज अनेक मत-मतांतरों का प्रचलन हो गया है मगर वेदों में वर्णित ज्ञान के आधार पर हम वैदिक धर्म को ही विभिन्न पंथों का आधार मानते हैं। वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति मानी गईं जिसका अनुसरण केवल भारतवासी ही नहीं अपितु विश्व के कई देशों के लोग करते हैं। वैदिक धर्म की अनेक विशेषताएं हैं यथा:-

1) वैदिक धर्म संसार के सभी मतों और सम्प्रदायों का उसी प्रकार आधार है जिस प्रकार संसार की सभी भाषाओं का आधार संस्कृत भाषा है जो सृष्टि के प्रारम्भ से अर्थात् 1,96,08,43,117 वर्ष से अभी तक अस्तित्व में है। संसार भर के अन्य मत, पन्थ किसी पीर-पैगम्बर, मसीहा, गुरु, महात्मा आदि द्वारा चलाये गये हैं किन्तु चारों वेदों के अपौरुषेय होने से वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य का चलाया हुआ नहीं है।

2) वैदिक धर्म में एक निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी ईश्वर को ही पूज्य (उपास्य) माना जाता है, उसके स्थान में अन्य देवी-देवताओं को नहीं।

3) वैदिक मान्यता है कि ईश्वर अवतार नहीं लेता अर्थात् कभी भी शरीर धारण नहीं करता।

4) जीव और ईश्वर (ब्रह्म) एक नहीं हैं बल्कि दोनों की सत्ता अलग-अलग है और मूल प्रकृति इन दोनों से अलग तीसरी सत्ता है। ये तीनों अनादि हैं और तीनों ही एक-दूसरे से उत्पन्न नहीं होते।

5) वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टिक्रम के नियमों के अनुकूल तथा बुद्धि सम्मत हैं जबकि अन्य मतों के बहुत से सिद्धान्त बुद्धि की घोर उपेक्षा करते हैं।

6) हरिद्वार, काशी, मथुरा, कुरुक्षेत्र, अमरनाथ, प्रयाग आदि स्थलों का नाम है, ये तीर्थ नहीं। जो मनुष्यों को दु:ख सागर से पार उतारते हैं उन्हें तीर्थ कहते हैं। विद्या, सत्संग, सत्यभाषण, पुरुषार्थ, विद्यादान, जितेन्द्रियता, परोपकार, योगाभ्यास, शालीनता आदि शुभ तीर्थ हैं।

7) भूत-प्रेत, डाकिन आदि के प्रचलित स्वरुप को वैदिक धर्म में स्वीकार नहीं किया जाता है।भूत-प्रेत शब्द आदि तो मृत शरीर के कालवाची शब्द हैं और कुछ नहीं।

8) स्वर्ग के देवता अलग से कोई नहीं होते। माता-पिता, गुरु, विद्वान् तथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि ही स्वर्ग के देवता होते हैं, जिन्हें यथावत् रखने व यथायोग्य उपयोग करने से सुखरूपी स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

9) स्वर्ग और नरक क्या हैं? स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष में नहीं होते, सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दु:ख विशेष का नाम नरक है और वे भी इसी संसार में शरीर के साथ ही भोगे जाते हैं। स्वर्ग-नरक के सम्बन्ध में गढ़ी हुई कहानियों का उद्देश्य केवल कुछ निष्कर्मण्य लोगों का भरण-पोषण करना है।

10) मुहूर्त क्या है? जिस समय चित्त प्रसन्न हो तथा परिवार में सुख-शान्ति हो वही मुहूर्त है। ग्रह-नक्षत्रों की दिशा देखकर तथाकथित पंडितों से शादी ब्याह, कारोबार आदि के मुहूर्त निकलवाना शिक्षित समाज का लक्षण नहीं, क्योंकि दिनों का नामकरण हमारा किया हुआ है, भगवान का नहीं अत: दिनों को हनुमान और शनि आदि के व्रतों के साथ जोड़ना व्यर्थ है, यह सर्वथा अवैदिक है।

11) राशिफल एवं फलित ज्योतिष- ग्रह नक्षत्र जड़ हैं और जड़ वस्तु का प्रभाव सभी पर एक-सा पड़ता है अलग-अलग नहीं, अत: ग्रह नक्षत्र देखकर राशि निर्धारित करना एवं उन राशियों के आधार पर मनुष्य के विषय में भांति-भांति की भविष्यवाणियां करना नितान्त अवैज्ञानिक है। जन्मपत्री देखकर वर-वधू का चयन करने के बजाए हमें गुण, कर्म, स्वभाव एवं चिकित्सकीय परीक्षण के आधार पर ही रिश्ते तय करने चाहिए। जन्मपत्रियों का मिलान करके जिनके विवाह हुए हैं क्या वे दम्पति पूर्णत: सुखी हैं?विचार करें राम-रावण व कृष्ण-कंस की राशि एक ही थी।

12) चमत्कार- दुनिया में चमत्कार कुछ भी नहीं है। हाथ घुमाकर चेन, लाकेट बनाना एवं भभूति देकर रोगों को ठीक करने का दावा करने वाले क्या उसी चमत्कार विद्या से रेल का इंजन व बड़े-बड़े भवन बना सकते हैं? या कैंसर, हृदय तथा मस्तिष्क के रोगों को बिना आपरेशन के ठीक कर सकते हैं? यदि वे ऐसा कर सकते हैं तो उन्होंने अपने आश्रमों में इन रोगों के उपचार के लिए बड़े-2 अस्पताल क्यों बना रखे हैं? वे अपनी चमत्कारी विद्या से देश के करोड़ों अभावग्रस्त लोगों के दु:ख-दर्द क्यों नहीं दूर कर देते?असल में चमत्कार एक मदारीपन है जो धर्म की आड़ में धर्मभीरु जनता के शोषण का बढ़िया तरीका है।

13) गुरु और गुरुडम- जीवन को संस्कारित करने में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है अत: गुरु के प्रति श्रद्धाभाव रखना उचित है

लेकिन गुरु को एक अलौकिक दिव्य शक्ति से युक्त मानकर उससे 'नामदान' लेना, भगवान् या भगवान् का प्रतिनिधि मानकर उसका अथवा उसके चित्र की पूजा अर्चना करना, उसके दर्शन या गुरु नाम का संकीर्तन करने मात्र से सब दु:खों और पापों से मुक्ति मानना आदि गुरुड़म की विष-बेल है अर्थात् वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध है अत: इसका परित्याग करना चाहिए।

14) मृतक कर्म मनुष्य की मृत्यु के बाद उसके मृत शरीर का दाहकर्म करने के पश्चात् अन्य कोई करणीय कार्य शेष नहीं रह जाता। आत्मा की शान्ति के लिए करवाया जाने वाला गरुड़पुराण आदि का पाठ या मन्त्र जाप इत्यादि धर्म की आड़ लेकर अधार्मिक लोगों द्वारा चलाया जाने वाला प्रायोजित पाखण्ड है।

15) राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि ऐतिहासिक महापुरुष थे न कि वे ईश्वर या ईश्वर के अवतार थे।

16) जो मनुष्य जैसे शुभ या अशुभ (बुरे) कर्म करता है उसको वैसा ही सुख या दु:खरूप फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी परिस्थिति में क्षमा नहीं करता है।

17) मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है, चाहे वह स्त्री हो या शूद्र अथवा अन्य कोई और।

18) प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रोन्नति के लिए गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर चार ही प्रकार के पुरुषों की आवश्यकता है इसीलिए वेद में चार वर्ण स्थापित किये हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

19) व्यक्तिगत उन्नति के लिए भी मनुष्य की आयु को चार भागों में बांटा गया है इन्हें चार आश्रम भी कहते हैं। इनमें २४ वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य आश्रम, 25 से 50 वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम, 50 से 75 वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थाश्रम और इसके आगे संन्यासाश्रम माना गया है।

20) जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता। अपने-अपने गुण, कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण आदि कहलाते हैं, चाहे वे किसी के भी घर में उत्पन्न हुए हों।

21) किसी भी मत-मतांतर को मानने वाले के घर उत्पन्न कोई भी मनुष्य जाति या जन्म के कारण अछूत नहीं होता। जब तक गन्दा है तब तक अछूत है चाहे वह जन्म से ब्राह्मण हो या अन्य कोई।

22) वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है।अच्छे कर्म अधिक करने पर अगले जन्म में मनुष्य का शरीर और बुरे कर्म करने पर पशु, पक्षी, कीट-पतंग आदि का शरीर, अपने कर्मों को भोगने के लिए मिलता है। यह ठीक वैसे ही है जैसे अपराध करने पर मनुष्य को कारागार में भेजा जाता है।

23) गंगा-यमुना आदि नदियों में स्नान करने से पाप नहीं

धुलते। वेद के अनुसार उत्तम कर्म करने से व्यक्ति भविष्य में पाप करने से बच सकता है। जल से तो केवल शरीर का मल साफ होता है आत्मा का नहीं।

24) प्रत्येक गृहस्थी को पंच महायज्ञ करना चाहिए।

25) मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा को संस्कारी (उत्तम) बनाने के लिए गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों का करना सभी गृहस्थजनों का कर्त्तव्य है।

26) मूर्तिपूजा, सूतियों का जल विसर्जन, जगराता, कांवड लाना, छुआछूत, जाति-पाति, जादू-टोना, डोरा-गंडा, ताबिज, शगुन, जन्मपत्री, फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, अन्धविश्वास, बलि-प्रथा, सतीप्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह आदि सामाजिक कुरीतियां वैदिक राह से भटक जाने के बाद हिन्दू धर्म के नाम से बनी हुई हैं, वेदों में इनका कहीं नाम भी नहीं है।

27) वेद के अनुसार जब मनुष्य सत्यज्ञान को प्राप्त करके निष्काम भाव से शुभकर्मों को प्राप्त करता है और महापुरुषों की भांति उपासना से ईश्वर के साथ सम्बन्ध जोड़ लेता है तब उसकी अविद्या (राग-द्वेष आदि की वासनाएं) समाप्त हो जाती हैं। मुक्ति में जीव 31 नील,10 खरब, 40 अरब वर्ष तक सब दु:खों से छूटकर केवल आनन्द का ही भोग करके फिर लौटकर मनुष्यों में उत्तम जन्म लेता है।

28) जब-जब मिलें तब-तब परस्पर 'नमस्ते शब्द' बोलकर अभिवादन करें। यही भारत की प्राचीनतम वैदिक प्रणाली है।

29) वेद में परमेश्वर के अनेक नामों का निर्देश किया है जिनमें मुख्य नाम 'ओ३म्' है। शेष नाम गौणिक कहलाते हैं अर्थात् यथा गुण तथा नाम।

संकलन -**जसविन्द्र आर्य**
युवा भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गायत्री मंत्र की महिमा

विशाल आर्य

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. हॉवर्ड **स्टिएनगेरिल** ने दुनिया भर के मंत्र, भजन, मंगलाचरणों का अपनी शरीर विज्ञान की प्रयोगशाला में गहन परीक्षण करने के बाद गायत्री मंत्र को विश्व की सबसे प्रभावशाली प्रार्थना घोषित किया है। उन्होंने पाया कि गायत्री मंत्र प्रति सेकेण्ड 1,10,000 ध्वनि तरंगे उत्पन्न करता है, जो सभी भजनों में सबसे ज्यादा हैं। उन्होंने पाया कि गायत्री मंत्र में विभिन्न आवृत्तियों (फ्रिक्वेंसी) के मिश्रण से विशेष आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करने की क्षमता विद्यमान है। इसके साथ ही हम्बर्ग विश्वविद्यालय ने भी गायत्री मंत्र के शरीर और मन पर पड़ने वाले प्रभावों पर शोधकार्य आरम्भ कर दिये हैं।

गायत्री मन्त्र में प्रथम जो 'ओ३म्' है यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है, इस एक 'ओ३म्' नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं जैसे-अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। वेदादि सत्यशास्त्रों में इसका ऐसा ही स्पष्ट व्याख्यान किया है।

तीन महाव्याहृतियों 'भूः, भुवः स्वः' के अर्थ भी संक्षेप से कहते हैं। 'भूरिति वै प्राणः' 'यः प्राणयति चराऽचरं जगत् स भूः स्वयम्भूरीश्वरः' जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है, उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है। 'भुवरित्यपानः' 'यः सर्वं दुःखमपानयति सोऽपानः' जो सब दुःखों से रहित, जिस के संग से जीवन सब दुःखों से छूट जाते हैं इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। 'स्वरिति व्यानः' 'यो विविधं जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः' जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है। ये तीनों वचन तैत्तिरीय आरण्यक ग्रन्थ के हैं।

(सवितुः) 'यः सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य' जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है। (देवस्य) 'यो दीव्यति दीव्यते वा स देवः' जो सर्वसुखों का देनेहारा और जिस की प्राप्ति की कामना सब करते हैं। उस परमात्मा का जो (वरेण्यम्) 'वर्त्तुमर्हम्' स्वीकार करने योग्य अतिश्रेष्ठ (भर्गः) 'शुद्धस्वरूपम्' शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है (तत्) उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग (धीमहि) 'धरेमहि' धारण करें। किस प्रयोजन के लिये कि (यः) 'जगदीश्वरः' जो सविता देव परमात्मा (नः) 'अस्माकम्' हमारी (धियः) 'बुद्धिः' बुद्धियों को (प्रचोदयात्) 'प्रेरयेत्' प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ा कर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।

गायत्री मन्त्र का हिन्दी भाषा में अर्थ-हे मनुष्यो ! जो सब समर्थों में समर्थ, सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, नित्य शुद्ध, नित्य मुक्तस्वभाव वाला, कृपासागर, ठीक-ठीक न्याय का करनेहारा, जन्ममरणादि क्लेशरहित, आकाररहित, सब के घट-घट का जानने वाला, सब का धर्त्ता, पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करनेहारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त, जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है, उस परमात्मा का जो शुद्ध चेतनस्वरूप है उसी को हम धारण करें। इस प्रयोजन के लिये कि वह परमेश्वर हमारे आत्मा और बुद्धियों का अन्तर्यामीस्वरूप से हम को दुष्टाचार अधर्मयुक्त मार्ग से हटा कर श्रेष्ठाचारयुक्त सत्य मार्ग में चलावे, उस को छोडकर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है। वही हमारा पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों का देनेहारा है।

यह गायत्री मन्त्र का संक्षिप्तार्थ, जो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में किया है, यह इतना सुन्दर अर्थ उनसे पूर्व अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। गायत्री मन्त्र गुरु मन्त्र भी कहलाता है क्योंकि इसी मन्त्र का प्रथम माता अपने बालक को घर में और गुरुकुल व पाठशाला में आचार्य ब्रह्मचारी को उपदेश करते थे। मन्त्र में ईश्वर के स्वरूप व उसके गुण, कर्म, स्वभाव पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही इसमें जीवन को सफल करने के लिए ईश्वर द्वारा बुद्धि को सद्प्रेरणा देने की प्रार्थना की गई है।

बच्चों को प्रेरणा देने का कार्य माता-पिता व आचार्य करते हैं। परमात्मा इन सबका भी आचार्य व गुरू होने के कारण उपासक व याचक द्वारा उस परम आचार्य ईश्वर से ही बुद्धि को सन्मार्ग में चलाने की प्रेरणा करने की प्रार्थना की गई है। परमात्मा आत्मा के भीतर सर्वान्तर्यामी रूप से विद्यमान है। वह हमारे मन के प्रत्येक विचार को जानता है, प्रार्थना को सुनता है और हमारे कर्मो को जानता है अतः उससे की गई प्रार्थना निःसन्देह सुनी भी जाती है और पात्रता के अनुसार पूरी भी की जाती है।

महर्षि दयानन्द, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, योगेश्वर श्रीकृष्ण, आचार्य चाणक्य व समस्त ऋषि-मुनि ईश्वर से गायत्री मन्त्र द्वारा श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करने व उसे प्रेरित करने की प्रार्थना करते आये हैं। हम भी गायत्री मन्त्र के अर्थ सहित जप व ईश्वर का ध्यान कर इष्ट को प्राप्त कर सकते हैं।

संकलनः- **विशाल आर्य**
साभारः आर्यसमाज
प्रचार प्रमुख, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

राजा भोज की यज्ञ-भावना

शिवम् शास्त्री

जो शुभ कर्म है और जो श्रेष्ठ करने वाले व्यक्ति हैं उनकी रक्षा सदैव राजा को करनी चाहिए। यज्ञ ही राष्ट्र का आधार है इसीलिए पवित्र वेद में कहा गया है कि **अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः** अर्थात् यह यज्ञ सम्पूर्ण भुवन का केन्द्र बिन्दु नाभि स्थल है। यज्ञ सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्मों को कहते हैं। हवन को भी यज्ञ कहते हैं।

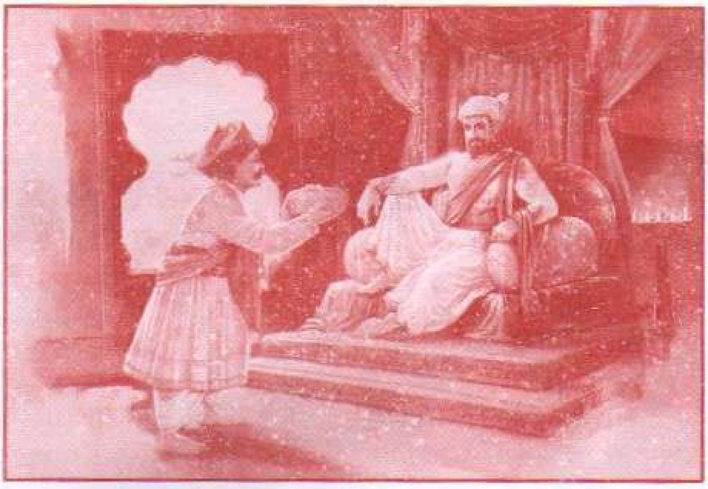

आज विश्व का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण के प्रदूषण को लेकर चिन्तित है लेकिन कोई भी समाधान नहीं हो पा रहा है। यदि यज्ञ को सरकारी स्तर पर मान्यता देकर प्रत्येक कार्यालय, विद्यालय आदि स्थानों पर प्रतिदिन अनिवार्य कर दिया जाय तो इस विकट समस्या का समाधान यथा शीघ्र हो जायेगा इसीलिए मन्त्र में परम पिता परमेश्वर ने निर्देश दिया है कि राजा को यज्ञ और यज्ञपति की रक्षा करनी चाहिए।

व्यापक अर्थ- यज्ञ के लिये जायें तो वे सारे कार्य यज्ञ में ही समाहित हो जाते हैं जो निस्वार्थ भावना से प्राणीमात्र के कल्याण को ध्यान में रखकर किये जाते हैं। राज्य में अराजकता तभी फैलती है जब यज्ञ भावना अर्थात् मिल-बाँटकर खाने की भावना को कुचल कर राक्षसी प्रवृत्तियाँ फलती-फूलती हैं। जब जमाखोरी की प्रवृत्ति पनपती है तो हजारों सुखों का ग्रास छीनकर एक व्यक्ति बैठ जाता है तब अराजकता फैलती है।

इसी बात को जब भरत वन में रामचन्द्र जी से मिलने गये तब श्रीराम ने प्रश्न पूछते हुए निर्देश दिया था

'कच्चिद् स्वादुकृतमेको नाश्नासि राघव।'

'भोज्यं काच्चिदाशं समानेभ्यो मित्रेभ्यः सम्प्रयच्छसि।।'

अर्थात् हे रघुनन्दन! तुम स्वादिष्ट अन्न अकेले ही तो नहीं खा जाते? उसकी आशा रखने वाले मित्रों को भी देते हो या नहीं?

यह थी वैदिक राजोचित मर्यादा। यह परहित साधकता श्रीराम के जीवन में भी कूट-कूटकर भरी थी यज्ञ भावना की रक्षा करना ही राम का परम ध्येय था और उन्होंने आजीवन इस भावना को मरने नहीं दिया। रावण और बालि का वध करके उन्होंने उनके राज्य उन्हीं के भाइयों को प्रदान कर दिया। हमारा भारतीय इतिहास तो यज्ञ भावना से भरा हुआ है।

राजा भोज के विषय में कहा जाता है कि वे यज्ञीय भावना से ओत-प्रोत थे और समाज के लिए समर्पित व्यक्तियों का विशेष ध्यान रखते थे और उन्हें बहुत बड़े पुरस्कार देकर सम्मानित करते थे। महाराजा भोज के एक मन्त्री भोज की इस उदारता से परेशान थे। वे सोचते थे कि राजा यदि इस प्रकार मुक्त हस्त देते रहे तो राज्य में आर्थिक संकट खड़ा हो जायेगा। तो उन मन्त्री का साहस सीधे तो महाराज को रोकने का न हुआ उन्होंने जहां भोज भ्रमण करने जाते थे वहां एक पंक्ति लिख दी :-

'आपदर्थे धनं रक्षेत्'

आपत्ति के लिए धन की रक्षा करें।

राजा ने इस वाक्य को देखा तो समझ गया कि हमारी दानवृत्ति से चिन्तित किसी ने सचेत करने के लिए ऐसा लिखा है तो उन्होंने उसके नीचे लिख दिया कि

'श्रीमतामापदः कुतः'

अर्थात् श्रीमानों पर आपत्ति कहाँ?

अर्थात् जो व्यक्ति अपने धन को यज्ञीय भावना से व्यय करके श्री बना देता है उसको आपत्ति कभी नहीं आती है।

अगले दिन मन्त्री ने पुनः तीसरा चरण लिख दिया -

'सा चेदपगता लक्ष्मीः'

यदि लक्ष्मी चली जाय तो !

राजा ने अगले दिन पुनः तीसरे चरण को पढ़ा और हँसते हुए चौथा चरण लिख दिया कि -

'संचितार्थो विनश्यति'

अर्थात् संचित किया हुआ धन भी नष्ट हो जाता है।

अगले दिन जब मन्त्री ने चौथा चरण पढ़ा तो राजा भोज से क्षमा याचना की और कहा कि मैं आपकी यज्ञ भावना और दृढ़ ईश्वर विश्वास के आगे नतमस्तक हूँ इसीलिए राजा भोज अधिक यशस्वी हुए और आज भी लोग उन्हें सम्मान के साथ याद करते हैं।

संकलनः- **शिवम् शास्त्री** आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई.पाठ्यक्रम के अनुसार **10+2** तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2015** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही यहां **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है –

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला भव्य प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

प्राकृतिक कृषि फार्म एवं अनुसंधान केन्द्र : गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी** के मार्गदर्शन में 180 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक कृषि की जाती है। साथ ही यहां पर प्राकृतिक खेती को लेकर नये प्रयोग भी किये जा रहे हैं जिससे खेती को किसानों के लिए फायदेमंद बनाया जाए। साथ ही गुरुकुल परिसर में किसानों को प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण हेतु भव्य प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण किया गया जिसमें किसानों को नि:शुल्क प्राकृतिक कृषि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 100 से अधिक कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 335 गायें हैं जो प्रतिदिन 1500 लीटर दूध देती हैं।

घुड़सवारी: इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

निशानेबाजी प्रशिक्षण : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु): गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस व स्कॉउट विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है। स्कॉउट विंग भी यहां स्थापित है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे: गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी **'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस'** कोर्स भी कराया जाता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग बनाया गया। वेद प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूमकर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक करते हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र : लोगों को जहरमुक्त एवं रसायनमुक्त फल, सब्जियाँ व अन्न उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **'प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र'** खोला गया है जहाँ पर गुरुकुल के सभी उत्पाद उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त **स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला** भी है। **आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं **'गुरुकुल-दर्शन'** मासिक पत्रिका से वैदिक धर्म एवं सनातन संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती पर आयोजित

विशेष कार्यक्रम एवं ऋषि लंगर की झलकियां

An ISO 9001:2015 Certified Institution

GURUKUL KURUKSHETRA HARYANA

Haryana's No. 1
Best Vintage Legacy Boys Boarding School by EW

Estd. 1912

ENTRANCE TEST 2024-25

ONLINE APPLICATION
Last Date : 10 March 2024
11 to 14 March 2024 with Late Fee of ₹1000/-

ENTRANCE EXAMINATION SCHEDULE

16th March 2024 Class : V
17th March 2024 Class : IX & XI
18th March 2024 Class : VI
19th March 2024 Class : VII
20th March 2024 Class : VIII

THE COUNSELLING WILL BE ON THE NEXT DAY OF THE ENTRANCE EXAM

DISTINCTIVE FEATURES

- Vedic value based institution affiliated to CBSE.
- 40 acres lush green campus with 1000 CCTV coverage.
- Five well-furnished multistorey hostels.
- Advanced digital library with 10,000 books, well equipped science labs, computer lab, Atal Tinkering Lab and smart classes.
- Vast play fields for shooting, horse riding, football, volleyball marshall art, handball, kabaddi, kho-kho, lawn tennis, yoga, gymnastics, badminton, skating and athletics.
- Finest allopathy and naturopathy hospitals.
- Healthy food prepared from grain produced in own natural farming.
- Own cowshed to provide cow milk to the students.
- Availability of post office and bank within campus.
- Students consistently securing merits in the last 10 years.
- Counselling and career guidance bureau.
- Integrated preparation for JEE/NEET and board powered by renowned faculty of India.
- Expert guidance for CLAT/CUET/Merchant Navy.
- Comprehensive ethical training.
- 31 students qualified for IIT, NIT, IIIT, NEET etc.
- 70+ students selected in last 10 years in NDA.
- 14 students selected in NDA in 2023.
- 10 students selected in NDA in the ongoing session 2024-2025.

Special Training & Career Counselling for

JEE/ NEET/ NDA/ CLAT/ Merchant Navy/ CUET

9996026311, 01744-238048, 238648   www.gurukulkurukshetra.com

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postel Reg. No. HR/ KKR/ 181/ 2024-2026

स्वामी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री राजकुमार गर्ग द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड निकट डी. एन. कॉलेज कुरुक्षेत्र से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक : राजकुमार गर्ग

मूल्य : 150 रुपये (वार्षिक)

प्रतिष्ठा में ____________________